*Enhanced Edition
NEP 2020 Guidelines

स्वर्णिमा

हिंदी पाठ्य-पुस्तक

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

8

YBPL

स्वर्णिमा कक्षा-8

अध्याय-1

अभ्यास: (पेज 6)

मौखिक–

(क) 1. विपत्ति कायर व्यक्ति को दहलाती है।
2. सूरमा (साहसी व्यक्ति) काँटों में राह बनाते हैं।
3. बत्ती न जलाने वाला रोशनी नहीं पाता है।

लिखित–

1. 'सूरमा' उन्हें कहते हैं जो विपत्ति से घबराकर चुपचाप नहीं बैठते। वे विपत्ति का सामना कर उसका हल निकालते हैं।
2. विघ्न-बाधाएँ साहसी व्यक्ति के सामने इसलिए नहीं ठहरतीं क्योंकि साहसी व्यक्ति जब दृढ़ निश्चय कर लेते हैं यानी जब वे पूरी तैयारी के साथ निकलते हैं तो बड़ी-बड़ी मुसीबतें खत्म करके ही वे वापस आते हैं।
3. इस कविता में हमें संदेश दिया गया है कि हमें वीर व्यक्तियों की तरह साहस से काम लेना चाहिए तथा हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।
4. मुझमें कुछ नया करने तथा अपने माता-पिता का नाम रोशन करने की चाह है इसलिए मैं नए-नए कार्य सीखने से नहीं घबराती और परेशानियों में उनसे बाहर आने का तरीका सोचती हूँ न कि परेशानी से घबराबर भाग जाती हूँ।

(ख) 1. (ब) धीरज 2. (स) विचलित 3. (अ) पत्थर 4. (अ) गुण

(ग) 1. अस्थिर 2. पल 3. पुरुष 4. धागा 5. डरपोक

(घ) 1. खम ठोकना – विजय उन दोनों के बीच खम ठोक रहा है।
2. पत्थर का पानी बनना – अगर व्यक्ति मन से मेहनत करे तो पत्थर भी पानी बन जाता है।
3. पाँव उखड़ना – महाराणा प्रताप की शक्ति देखकर मुगल सैनिकों के पाँव उखड़ने लगे।
4. गले लगाना – बहुत दिनों बाद घर आने पर माँ ने रोते-रोते मुझे गले लगा लिया।

* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

भाषा ज्ञान–

1. ज़्यादा (परिणामवाचक विशेषण) 2. हमारे (सार्वनामिक विशेषण)
हानिकारक (गुणवाचक विशेषण) बड़ा (गुणवाचक विशेषण)
3. बहुत-सी (संख्यावाचक विशेषण- अनिश्चित)
4. दो मीटर (परिमाणवाचक विशेषण) आपकी (सार्वनामिक विशेषण)
5. थोड़ा (परिणामवाचक विशेषण) प्यासे (गुणवाचक विशेषण)

रचनात्मक ज्ञान–

(क) * विद्यार्थी दी गई जानकारी को स्वयं पढ़कर 'दिनकर' जी के बारे में जानेंगे।

(ख) कलम, आज उनकी जय बोल (उदाहरण कविता)

जला अस्थियाँ बारी-बारी
चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर
लिए बिना गरदन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफ़ानों में एक किनारे,

जल-जलाकर बुझ गए किसी दिन
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही सौ लपट दिशाएँ
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के
सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

* विद्यार्थी स्वयं इंटरनेट से रामधारी सिंह जी की कोई कविता पढ़कर अपनी कॉपी में लिखेंगे। ऊपर दी गई कविता अध्यापिका कक्षा में सुना सकती हैं।

अध्याय-2

सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुँह काला

अभ्यास: (पेज 13)

मौखिक–

(क) 1. राजा का नाई बहुत धूर्त व्यक्ति था।
2. एक बार मंत्री ने नाई की किसी हरकत से नाराज़ होकर, उसे डाँट दिया था। तभी से नाई ने मंत्री को मज़ा चखाने की ठान ली थी।
3. नाई ने एक पंडित से राजा को यह कहलवाया कि उनके माता-पिता जो कि स्वर्ग में हैं, उन्हें एक सलाहकार चाहिए तथा वह सलाहकार कोई योग्य व्यक्ति ही हो। राजा को मंत्री पर बहुत विश्वास था इसलिए वह मंत्री को सलाहकार के रूप में स्वर्ग भेजने के लिए तैयार हो गया।
4. पंडित ने राजा से कहा कि उनके माता-पिता को स्वर्ग में यह दुख सताता रहता है कि उनका कोई सलाहकार स्वर्ग में नहीं है।
5. राजा का फ़ैसला सुनने के बाद मंत्री अपने घर चला गया तथा उसने यह बात अपनी पत्नी व बेटी को बताई। मंत्री ने बताया कि यह सब किया धरा नाई का है। मंत्री की बेटी ने उसे एक महीने का समय राजा से माँगने के लिए कहा। मंत्री ने बिलकुल ऐसा ही किया।

लिखित–

1. पंडित ने राजा को समस्या का यह उपाय बताया कि वे (राजा) अपने किसी विश्वस्त सलाहकार को स्वर्ग में अपने माता-पिता के पास भेजें जो उनसे (माता-पिता) रोचक बातें करे तथा उन्हें उचित सलाह भी दे पाए।
2. मंत्री की पुत्री ने मंत्री को राजा से एक महीने का समय माँगने के लिए कहा था।
3. मंत्री दो महीने बाद दरबार में प्रकट हुआ था।
4. मंत्री ने राजा से कहा कि उनके माता-पिता को स्वर्ग में एक नाई की ज़रूरत है क्योंकि उनके बाल बहुत बढ़ गए हैं।
5. नाई को पता चल गया था कि मंत्री ने उसकी बदमाशी पकड़ ली है तथा अब राजा उसे सज़ा ज़रूर देंगे इसलिए आधी रात को अपना कीमती सामान लेकर घर छोड़कर भाग रहा था।

(ख) 1. (स) फाँसी की ✓ 2. (ब) नाई ✓ 3. (स) देश-निकाला ✓

4. (अ) मंत्री की पुत्री ने ✓ 5. (स) मंदबुद्धि ✓

(ग) 1. उसकी जेब तो पहले – से ही गरम हो चुकी थी।
2. पर, नाई का हृदय – बल्लियों उछल रहा था।
3. सवालों की आँधी ने – उसके मन को झकझोर दिया।
4. उसे नाई की हरकत का – पता चल ही चुका था।
5. यह कहकर राजा – सिंहासन से नीचे उतरा।

(घ) 1. मंत्री ने राजा से कहा। 2. मंत्री ने राजा से कहा। 3. मंत्री की पुत्री ने मंत्री से कहा।
4. मंत्री ने पत्नी से कहा। 5. पंडित ने राजा से कहा।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग

(ख) 1. माता और पिता 2. सिखाया और पढ़ाया 3. राज का दरबार
4. सुख और सुविधा

(ग) 1. यौवन 2. गरीबी 3. राष्ट्रीयता 4. मडिका 5. इनसानियत

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण उत्तर

नाई राजा के पास इसलिए रहता था क्योंकि वह राजा के बाल और दाढ़ी बनाता था। वह कभी-कभी राजा के मुँह और शरीर की मालिश भी कर देता होगा। राजा के बाल बनाते समय वह राजा को प्रजा की राजा के प्रति सोच भी बताता होगा। नाई राजा का हर कार्य बहुत प्रेम से करता होगा तथा वह नियम से राजा के बाल काटता होगा। वह राजा को नगर के अंदर की खबरें भी बताता होगा।

* विद्यार्थी स्वयं अनुमान लगाकर बताएँगे कि राजा नाई को इतना पसंद क्यों करता था।

(ख) नहीं, मैं ऐसी बातों पर विश्वास नहीं करती क्योंकि हमारा शरीर एक मशीन है। जब इसमें कोई खराबी आ जाती है, जिसे डॉक्टर ठीक नहीं कर पाते। तब हमारा स्वर्गवास हो जाता है। हमारे मरने के बाद कोई अन्य दुनिया जहाँ हमारे पूर्वज हैं, वहाँ हम जाते हैं ऐसी कोई दुनिया मुझे नहीं लगती। हमारे पूर्वज या रिश्तेदार जो इस दुनिया में नहीं हैं, अगर उनके लिए हम कोई विशेष चीज़ बनाकर किसी कौए को या किसी जानवर को खिलाते या पिलाते हैं तो यह कैसे हो सकता है कि हमारे पूर्वजों का भी पेट भर जाए? यह सब मिथ है। इंसान को उसके कार्यों का फल इसी दुनिया में भुगतना पड़ता है। मैं इस अंध विश्वास पर बिलकुल भी विश्वास नहीं रखती। मेहनत करें तथा फल पाएँ।

* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने के लिए कहें।

(ग) यदि मंत्री सूझ-बूझ से काम न लेता तो इस कहानी का अंत बिलकुल भिन्न होता। तब राजा के सैनिक मंत्री को स्वर्ग भेजने के लिए उसे मार देते या शायद! जिंदा चिता पर बैठा देते। हो सकता है कि मंत्री अपने परिवार के साथ नगर से भाग जाता परंतु पकड़े जाने पर उसे यह सज़ा ज़रूर भुगतनी पड़ी। कहानी के अंत में यह भी हो सकता था कि मंत्री के परिवार के लोग राजा से सज़ा माफ़ करने की गुहार लगाते और राजा तरस खाकर सज़ा माफ़ कर देता। मंत्री के परिवार के लोग पंडित को अधिक पैसा देकर राजा के सामने नाई की सच्चाई रखने के लिए भी कह सकते थे।

* विद्यार्थियों को स्वयं अनुमान लगाकर उत्तर लिखने के लिए कहें।

अध्याय-3

बूढ़ी काकी

अभ्यासः (पेज 23)

मौखिक–

(क) 1. बूढ़ी काकी अपने भतीजे के पास इसलिए रहती थी क्योंकि वह बूढ़ी हो चुकी थी और उनके पति व बेटे भी स्वर्ग सिधार चुके थे। वह अकेली थी।

2. बूढ़ी काकी ने अपनी सारी संपत्ति अपने भतीजे के नाम इसलिए लिख दी थी क्योंकि उसका केवल वही एक रिश्तेदार बचा था। बूढ़ी होने के कारण काकी को बस खाना चाहिए था वो भी उसे समय पर नहीं मिल पाता था।
3. बूढ़ी काकी के रोने पर ध्यान इसलिए नहीं दिया जाता था क्योंकि सभी को लगता था कि वो केवल खाने के न मिलने पर रोती हैं और उन्हें अन्य कोई परेशानी नहीं थी।
4. घर में उत्सव होने पर भी बूढ़ी काकी को भोजन इसलिए नहीं दिया गया था क्योंकि बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा दोनों ही बूढ़ी काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे।
5. जब रूपा ने बूढ़ी काकी को मेहमानों के पत्तलों में से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खाते हुए देखा तो उसे अपनी स्वार्थपरता और अन्याय भाव पर बहुत क्रोध आया इसलिए उसने भगवान से अपना अपराध क्षमा करने की प्रार्थना की थी।

लिखित–

1. बूढ़ी काकी की दयनीय स्थिति का कारण यह था कि वे भूख बर्दाश्त नहीं कर पाती थीं। काकी के पति तथा बच्चों का देहांत हो चुका था व उन्होंने अपनी सारी संपत्ति भी बुद्धिराम को दे दी थी इसलिए उनका जैसा मन करता था वो काकी के साथ वैसा ही व्यवहार करते थे।
2. बुद्धिराम के घर में शहनाई इसलिए बज रही थी क्योंकि उसके बड़े बेटे मुखराम का तिलक आया था।
3. घर में उत्सव के समय बहुत से मेहमान आए हुए थे तथा रूपा अकेले उनके खाने-पीने का प्रबंध कर रही थी। जब उसने (रूपा ने) और बुद्धिराम ने काकी को मेहमानों के बीच खाना खाने के लिए घूमते हुए देखा तो काकी को सबक सिखाने के लिए किसी ने काकी को नहीं पूछा।
4. लाडली द्वारा लाई पूड़ियों से जब काकी का पेट नहीं भरा तो उन्होंने लाडली को उन्हें वहाँ लेकर जाने के लिए कहा जहाँ मेहमानों के जूठे पत्तल पड़े थे। वहाँ पहुँचकर काकी जूठे पत्तलों में से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खाने लगीं।

(ख) 1. (ब) बचपन का ✓ 2. (अ) भतीजे के नाम ✓ 3. (स) लाडली को ✓
4. (ब) पूड़ियाँ ✓

(ग) 1. प्रबंध 2. पूडियाँ 3. कठिनाई 4. पश्चाताप

(घ) 1. दुख 2. बुरा शगुन 3. व्याकुल 4. इच्छा 5. बुरी दशा
6. दयाहीन 7. पक्का इरादा 8. तेज 9. युवा 10. प्रेम

भाषा ज्ञान–

(क) 1. मदोन्मत्त 2. योगेंद्र 3. दीक्षांत 4. स्वस्ति 5. स्वागत
6. लोकेश

(ख) 1. स्वादिष्ट 2. बूढ़ी 3. लाल-लाल, फूली-फूली, नरम-नरम 4. बड़े, मसालेदार

(ग) 1. खाकर, चाटता देखता 2. पड़ी, सो, 3. रोना-सिसकना, रोती
4. दौड़ते-दौड़ते 5. बैठी

रचनात्मक ज्ञान–

(क) बच्चों द्वारा अपने माता-पिता की सेवा न करने के पीछे विभिन्न कारण हो सकते हैं। हमारे समाज में ईश्वर के बाद यह कहें कि माता-पिता को ईश्वर का ही रूप माना गया है। फिर भी कुछ बच्चे अज्ञानता वश अपने माता-पिता का सम्मान या उनकी देखभाल नहीं करते हैं। इनके कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार से हैं–

1. बच्चों में संस्कारों की कमी होना।
2. बच्चों में दूसरों के प्रति प्रेम भावना का न होना।
3. आर्थिक रूप से सक्षम न होना। (बच्चों का)
4. बच्चों का स्वार्थी स्वभाव

5. संयुक्त परिवारों की जगह एकांकी परिवारों का अधिक चलन।
6. समाज में खत्म होते जा रहे नैतिक सिद्धांत
7. बच्चों का विदेशों में जाकर बसना।

* विद्यार्थियों को इस विषय से संबंधित अपने कारण स्वयं बताने के लिए प्रेरित करें।

(ख) 'वृद्ध हमारी अमानत'

हमारे देश में वृद्धों का सम्मान बहुत पहले से ही किया जा रहा है। बड़े बुजुर्ग हमें अपने अनुभवों द्वारा अच्छा ज्ञान देते हैं। वो अपना स्वार्थ त्यागकर हमारी खुशी के लिए समर्पित रहते हैं। बच्चे बचपन में अपना अधिकांश समय दादा-दादी की गोद में बिताते हैं तथा उनसे अच्छे संस्कार प्राप्त करते हैं। ये हमारी अमानत हैं इसलिए हमें इन्हें पूर्ण आदर देना चाहिए। मुसीबत के समय भी बुजुर्ग अपना सब कुछ बच्चों पर खर्च करने के लिए तैयार रहते हैं। उनके रहते बच्चे निश्चिंत होकर कहीं भी आ-जा सकते हैं। लेकिन आजकल बच्चे इन्हें बोझ समझकर वृद्धा आश्रमों में छोड़ आते हैं। यह बिलकुल गलत है। इन्हें उचित मान व प्यार दें।

* विद्यार्थियों को इस विषय पर चर्चा करने के लिए प्रेरित करें।

अध्याय-4

पंच परमेश्वर

अभ्यास: (पेज 35)

मौखिक–

(क) 1. जुम्मन ने अलगू चौधरी के पक्ष में फ़ैसला सुनाया था।
2. एक-दूसरे पर अटल विश्वास और विचारों का मिलना दोस्ती का मूलमंत्र है।
3. खाला ने अलगू चौधरी को सरपंच नियुक्त किया।
4. पंचायत का काम न्याय करना होता है। पंचायत दोनों पक्षों की बातें सुनकर निर्णय देती है।
5. समझू साहू गाँव के गुड़-घी मंडी ले जाकर बेचते थे तथा तेल और नमक मंडी से लाकर गाँव में बचते थे। इन्हें अलगू चौधरी ने अपना बैल बेचा था।

लिखित–

1. जुम्मन शेख़ ने बूढ़ी खाला से लंबे-चौड़े वादे करके उनकी सारी संपत्ति अपने नाम लिखवा ली थी। जब तक संपत्ति की रजिस्ट्री नहीं हुई थी वह खाला की खूब सेवा करता था। उनका पूरा आदर-स. त्कार करता था व उन्हें स्वादिष्ट पकवान भी खिलाता था इसलिए रजिस्ट्री-मोहर ने इन खातिरदारियों पर मुहर लगा दी थी।
2. जुम्मन को जीत का विश्वास इसलिए था क्योंकि अलगू चौधरी और जुम्मन में गाढ़ी मित्रता थी। जुम्मन सोचता था कि उनका दोस्त चाहे सरपंच बन गया है पर वह अपना फ़ैसला जुम्मन के पक्ष में ही सुनाएगा वे दोनों साथ ही उठते-बैठते थे तथा उनका बहुत करीबी रिश्ता था।
3. अलगू चौधरी ने अपनी फ़ैसला बूढ़ी खाला के पक्ष में सुनाया था। उन्होंने जुम्मन को बूढ़ी खाला को माहवार खर्च देने का निर्णय सुनाया था और अगर जुम्मन को यह निर्णय उचित नहीं लग रहा हो तो हिब्बानामा रद्द कर देना ही उचित है।
4. अलगू चौधरी व जुम्मन की मित्रता में दरार का मुख्य कारण अलगू द्वारा बूढ़ी खाला के पक्ष में दिया गया निर्णय था।
5. जब जुम्मन शेख़ पंच बने तब अलगू चौधरी व समझू साहू की बातें सुनने के बाद उन्होंने पंच की ज़िम्मेदारी अच्छे से निभाते हुए न्याय संगत निर्णय लिया। उन्होंने समझू साहू को दंड दिया। इसके बाद जुम्मन शेख़ ने अलगू चौधरी से अपने व्यवहार के लिए क्षमा माँगी। इसके परिणाम स्वरूप दोनों की दोस्ती की मुरझाई लता फिर से हरी हो गई।

(ख) 1. (ब) ज्ञान ✓ 2. (स) खाला ✓ 3. (स) पेड़ के नीचे ✓
4. (स) जुम्मन ✓ 5. (अ) पंच में ✓

(ग) 1. ईमान 2. नाई 3. बहली 4. 5. जुम्मन शेख़

(घ) 1. पंचों ने दोनों पक्षों से– सवाल जावब करने शुरू किए।
2. समझू के साथ कुछ– रियायत होनी चाहिए।
3. प्रत्येक मनुष्य जुम्मन की– नीति को सराहता था।
4. न्याय के सिवा उसे और– कुछ नहीं सूझता।
5. इस पानी से दोनों के– दिलो का मैल घुल गया।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ख) 1. फूला न समाना– कक्षा में अध्यापिका द्वारा प्रशंसा होने पर नेहा खुशी से फूला न समाई।
2. कलेजा धक-धक करना– जुम्मन के सरपंच बनने से अलगू चौधरी का कलेजा धक-धक करने लगा।
3. दिल का मैल धुल गया– आँसुओं से दोनों मित्रों के दिलों का मैल धुल गया।

(ग) 1. मित्रता ✓ 2. संबंधियों ✓ 3. स्थानीय ✓ 4. नम्रता ✓

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण उत्तर

जी नहीं, समझू साहू ने बैल के साथ उचित व्यवहार नहीं किया था। उसने बैल से उसकी क्षमता से अधिक कार्य लिया तथा खाने में भी ज़रूरत से कम आहार दिया। इस कारण बैल कमज़ोर हो गया तथा बोझ नहीं उठा पाया व मर गया। हमें अपने पालतू जानवरों को घर के सदस्य के रूप में ही मानना चाहिए। उन्हें खाने के लिए ज़रूरत के अनुसार भोजन देना चाहिए। उन्हें आराम करने के लिए भी समय देना चाहिए ताकि वे अपनी शक्ति पुन: अर्जित कर पाएँ। उन्हें मारना नहीं चाहिए तथा बीमार होने पर उनका इलाज भी पशु चिकित्सक से करवाना चाहिए। उन्हें प्यार व स्नेह अवश्य देना चाहिए। जहाँ उन्हें रखा जाता है, वहाँ साफ़-सफ़ाई अवश्य होनी चाहिए तथा उन्हें कुछ समय के लिए आँगन में धूप या खुली हवा में विचरण करने के लिए छोड़ना चाहिए।

* विद्यार्थी इस प्रश्न का उत्तर स्वयं लिखेंगे। उदाहरण उत्तर अध्यापिका की सहायता के लिए दिया गया है।

(ख) वृद्धों की स्थिति कैसे सुधारी जाए?

उदाहरण चर्चा बिंदु

1. वृद्धों की देखभाल उनके बच्चों के साथ-साथ सरकार द्वारा भी की जानी चाहिए।
2. महीनों में दो बार सरकार द्वारा जो वृद्ध अकेले रहते हैं, उनके घर पुलिसकर्मी भेजे जाने चाहिए ताकि वे वृद्धों की सुरक्षा आदि का प्रबंध देख पाएँ।
3. हर घर जिसमें वृद्ध रहते हैं, उनसे संपर्क साधा जाए। इसके लिए कई समाजसेवी संस्थाएँ आगे आ सकती हैं।
4. वृद्धों की मदद के लिए बनाई गई हेल्प लाइन नंबर 14567 का प्रचार किया जाए ताकि सभी को इस हेल्प लाइन के बारे में पता हो।
5. जिन वृद्धों का कोई नहीं है, उनकी संपत्ति की देखभाल सरकार द्वारा की जानी चाहिए तथा यह वृद्ध के ऊपर निर्भर करता है कि मरणोपरांत वे संपत्ति सरकार को दान करें या अपने रिश्तेदारों को दें। वृद्धों के देहांत से पहले उनकी संपत्ति पर किसी का कोई हक नहीं होगा यह नियम बना दिया जाए।
6. वृद्धों को कानूनी सहायता बिना पैसे के मिलनी चाहिए व उन्हें बार-बार कचहरी के चक्कर भी नहीं लगवाने चाहिए।
7. बच्चो, जवानों और लोगों के मन वृद्धों के प्रति आदर की भावना पैदा करने के लिए पुस्तकों में पंच-परमेश्वर' जैसे पाठ ज़रूर होने चाहिएँ।

* विद्यार्थी स्वयं अपने विचार सोचकर कक्षा में आयोजित चर्चा में प्रस्तुत करेंगे।

(ग) 'वृद्ध– हमारी धरोहर' (अनुच्छेद)

उदाहरण

हमारे बुज़ुर्ग हमारी धरोहर हैं क्योंकि ये वो पेड़ हैं जिनकी छाया में हम पलते हैं। इनके कारण ही हमारा अस्तित्व होता है। इनके अनुभव सुनकर व ग्रहण कर हम आगे बढ़ते हैं तथा सफलता पाते हैं। घर में अगर वृद्ध व्यक्ति होते हैं, तो अन्य सदस्यों को चिंता या तनाव कम महसूस होता है क्योंकि बुज़ुर्ग अपने ज्ञान व अनुभव से हमारी चिंता और तनाव कम कर देते हैं। हमें अपने रीति-रिवाज़ों की जानकारी भी इन्हीं से मिलती है। आजकल के युवा पीढ़ी शायद अपने भौतिक सुखों के कारण इतनी स्वार्थी हो गई है कि वह बुज़ुर्गों को अकेले रहने के लिए विवश कर रही है। इसका दुष्परिणाम भी हम भुगत रहे हैं कि आगे चलकर हमारे बच्चे भी हमें अपने साथ नहीं रखना चाहते। बुज़ुर्गों का साथ, अनुभवों का अंबार और दृष्टिकोण परिवार को मजबूत बनाता है इसलिए बुज़ुर्गों को उचित आदर-सत्कार, प्रेम और अधिकार दें। अंत में हम यही कहना चाहेंगे कि–

बुज़ुर्ग हैं खरा सोना।
स्वार्थ में आकर इन्हें न खोना।

अध्याय-5

जीवन का झरना

अभ्यास: (पेज 39)

मौखिक–

(क) 1. कवि ने जीवन को झरना कहा है।

2. झरना परेशानियों के रोड़ों से लड़ता हुआ, वन के पेड़-पौधों से टकराता हुआ और चट्टानों पर चढ़ता हुआ आगे बढ़ता जाता है।
3. जिस दिन जीवन रूपी झरने की गति रुक जाएगी यानी जब इंसान चलना छोड़ देगा, काम करना छोड़ देगा, सोचना-समझना सब छोड़ देगा तब उसकी मृत्यु हो जाएगी।
4. झरना कहता है कि पीछे मुड़कर मत देखो। जैसे झरने का पानी आगे की तरफ़ बहता है ठीक वैसे ही जीवन में जो समय बीत गया उसे देखने की जगह आगे के समय को बेहतर बनाने का सोचो।
5. झरना झरकर कहता है कि जीवन में रुक जाना यानी जीवन के रुक जाने का अर्थ मृत्यु है। जीवन चलने का नाम है इसलिए चलते चलो।

लिखित–

1. झरने रूपी जीवन में मस्ती करना इस झरने के पानी के समान है। जैसे झरने में पानी नहीं होगा तो झरना, झरना नहीं लगेगा ठीक उसी तरह जीवन में मस्ती न होगी तो जीवन जीने का कोई आनंद ही नहीं होगा।
2. झरने और जीवन की सिर्फ़ एक ही धुन है 'चलते रहना'। जैसे झरना निरंतर बहता रहता है, ठीक वैसे ही जीवन भी निरंतर चलता रहता है।
3. लहरों के उठने और गिरने से किनारे पर नाविक पछताते हैं। ऐसे ही जीवन में रुकने और बढ़ने का प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है इसलिए जीवन चलता रहे यही अच्छा है।
4. 'यौवन' यानी युवावस्था में व्यक्ति आगे बढ़ने का प्रयास ही करता रहता है इसलिए यौवन हमें यह कहता है कि आगे बढ़ते चलो और मत सोचो कि तुम सफल होंगे या असफल।
5. जीवन निरंतर चलता रहता है।

(ख) 1. (स) दोनों किनारे ✓ 2. (अ) यौवन ✓ 3. (अ) झरना ✓
4. (अ) यौवन ✓ 5. (ब) मर जाना ✓

(ग) 1. कब फूटा गिरी के अंतर से, – किस अंचल से उतरा नीचे?
2. बाधा के रोड़ो से लड़ता,– वन के पेड़ों से टकराता।
3. चलना है, केवल चलना है, – जीवन चलता ही रहता है।
4. लहरें उठती हैं, गिरती हैं, – नाविक तट पर पछताता है।
5. मर जाना है रुक जाना ही, – निर्झर यह झरकर कहता है।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. अंतर– असमानता, आंतरिक 2. अंचल– क्षेत्र, नदी का किनारा
3. गति– चाल, जाने की अवस्था 4. जग– पानी पीने / रखने का बरतन, संसार
5. घड़ी– पल, समय देखने का उपकरण

(ख) 1. जीवन– मृत्यु 2. समतल– खुरदरा / उबड़-खाबड़
3. नीचे– ऊपर 4. अचल– चल 5. पीछे- आगे

(ग) 1. घड़ी– घड़ियाँ 2. घाटी– घाटियाँ 3. तीरों– तीर
4. झरना– झरने 5. राह– राहें

(घ) 1. जीवन– जीवन में सुख-दुख आते रहते हैं।
2. राह– सच्चाई की राह पर चलना बहुत कठिन है।
3. बाधा– जीवन में चाहे कोई भी बाधा आ जाए, हमें रुकना नहीं चाहिए।
4. युवक– बाहर बहुत से युवक और युवतियाँ खड़े हैं।
5. घड़ियाँ– मेरे पास कई विदेशी घड़ियाँ हैं।
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

(ङ) 1. (अ) मृत्यु ✓ 2. पथ, मार्ग ✓ 3. (स) घाटियाँ ✓
4. (द) युवती ✓

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण अनुच्छेद

'जीवन का झरना' कविता आरसी प्रसाद सिंह की प्रेरणादायी कविता है जिसमें उन्होंने जीवन की तुलना झरने से करते हुए निरंतर गतिशील रहने की प्रेरणा दी है। कवि कहते हैं कि हमारा जीवन एक झरना है तथा मस्ती उस झरने का पानी है। सुख और दुख इस झरने के किनारे हैं। जैसे झरने में गति है वैसे ही हमारे जीवन में यौवन है। यौवन के आते ही हम आगे बढ़ते रहने का अधिक सोचते हैं तथा बाधाओं को हटाकर अपना मार्ग ढूँढ़ लेते हैं। जैसे अगर झरना गतिशील न होगा तो वह खत्म हो जाएगा ठीक उसी तरह अगर मनुष्य कार्यशील न होगा तो यह जीवन भी खत्म हो जाएगा। जिस दिन मनुष्य की क्रियाशीलता समाप्त हो जाएगी उसी दिन से उसकी दुर्दशा शुरू हो जाएगी। हमेशा चलते रहो। क्योंकि जीवन है केवल चलने का नाम। इस तरह कवि ने कर्म को सिद्धांत के आधार पर झरने और जीवन की समानता को परिभाषित किया है।

* विद्यार्थी कविता का भावार्थ स्वयं लिखेंगे।

(ख) वार्तालाप

उदाहरण वार्तालाप

दूसरा विद्यार्थी– झरना किसी पहाड़ के अंदर से फूटता है और किसी न किसी क्षेत्र में बहने लगता है। ऐसे ही जीवन किसे, कब मिल जाए या किस घर में जीवन का संचार हो यह किसी को नहीं पता।

शिक्षक– जीवन रूपी झरने में क्या-क्या है?

तीसरा विद्यार्थी– जीवन रूपी झरने में गति और यौवन है। जिनके कारण यह निरंतर चलता रहता है। परेशानियों से उबरता है। सुख-दुख आते और जाते रहते हैं पर युवा उन सबको झेलकर आगे बढ़ते जाते हैं।

शिक्षक– अगर किसी दिन निर्झर रूपी जीवन की गति रुक जाए तब क्या होगा?

चौथा विद्यार्थी– जिस दिन यह गति रुक जाएगी अर्थात व्यक्ति काम करना या आगे बढ़ने की चाह छोड़ देगा, उस दिन यह मानव जीवन खत्म हो जाएगा तथा लोगों के बुरे दिन शुरू हो जाएँगे।

शिक्षक– 'निर्झर' हमें क्या कहता है?

पाँचवा विद्यार्थी– निर्झर हमें जीवन में चलते रहने के लिए कहता है। निर्झर हमें पीछे मुड़कर देखने से मना करता है तथा झरने के पानी की तरह आगे बढ़ते जाने को कहता है।

शिक्षक– और 'यौवन' हमें क्या कहता है?

छठा विद्यार्थी– 'यौवन' हमें घबराकर या अधिक सोच-विचार में समय व्यतीत न करने को कहता है

तथा कहता है कि यह मत सोचो कि क्या होगा? बस आगे बढ़ते जाओ और काम करते जाओ।
* विद्यार्थियों को पूर्ण कविता वार्तालाप के रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहें।

अध्याय-6

मूर्खों का साथ

अभ्यास: (पेज 45)

मौखिक–

(क) 1. दरबारियों ने महाराज से प्रार्थना की कि कभी-कभी महाराज उन्हें भी अपने साथ बाहर ले जाया करें। हर बार तेनालीराम ही राजा के साथ जाते हैं।
2. किसान ने राजा की तुलना एक गन्ने से की थी।
3. राजा कृष्णदेव राय गाँव में भ्रमण करने वेश बदलकर गए थे।
4. गाँव के किसानों के बीच बैठा बूढ़ा किसान तेनालीराम था।
5. जब गाँववाले राजा कृष्णदेव राय का स्वागत कर रहे थे तब अन्य दरबारी मुँह लटकाकर ज़मीन कुरेद रहे थे।

लिखित–

(क) 1. दरबारी तेनालीराम से इसलिए जलते थे क्योंकि कृष्णदेव राय जहाँ कहीं भी जाते, अपने साथ तेनाल. ीराम को ज़रूर ले जाते थे।
2. जब किसान ने कृष्णदेव राय को गन्ने के समान बताया तो अपनी तुलना गन्ने से होते हुए देखकर कृष्णदेव राय सकपका गए।
3. बूढ़े किसान के साथी ने राजा को बताया कि बूढ़े किसान ने राजा को गन्ने के समान इसलिए कहा है क्योंकि हमारे राजा अपनी प्रजा के लिए कोमल और रसीले हैं जैसे गन्ना अंदर से रसभरा होता है। लेकिन गन्ना कठोर भी होता है, इसलिए हमारे राजा दुष्टों व दुश्मनों के लिए कठोर हैं।
4. मूर्खों का साथ दुखदायी इसलिए होता है क्योंकि मूर्ख व्यक्ति कभी भी उचित सलाह नहीं देता और न ही उचित फ़ैसला लेने में मदद करता है। राजा भी अपने मूर्ख दरबारी की बातें सुनकर बूढ़े किसान को दंड देने वाला था परंतु तेनालीराम ने अपनी समझदारी से किसान को बचा लिया।

(ख) 1. (स) संतान ✓ 2. (अ) दुखदायी ✓ 3. (ब) गन्ने की तरह
4. (अ) तेनालीराम को

(ग) 1. हाँ 2. नहीं 3. हाँ 4. नहीं 5. हाँ

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

भाषा ज्ञान–

(क) 1. 'मूर्खों का साथ हमेशा दुखदायी' (अनुच्छेद)
मूर्खों का साथ हमेशा दुखदायी होता है। इससे यह अभिप्राय है कि मूर्ख व्यक्ति कभी भी हमें उचित सलाह नहीं देता है क्योंकि उसमें बुद्धि की कमी होती है। जब हम मूर्ख व्यक्ति की बात मानकर कोई काम करते हैं तो हमे कष्ट ही मिलता है। अगर हम भी मूर्ख व्यक्ति का साथ देते हैं तो हम अपने आप को खुद हानि पहुँचाते हैं। अंत में कह सकते हैं कि मूर्खों से दोस्ती अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है।

(ख) 1. राजा– बादशाह, नृप 2. गाँव– ग्राम, देहात 3. किसान– कृषक, हलधर
4. दुश्मन– शत्रु, रिपु 5. मूर्ख– अज्ञानी, अल्पमति

(ग) 1. दरबारियों 2. गाँवों 3. खेत 4. किसानों 5. संतानें

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण कहानी
दूध न पीने वाली बिल्ली
एक बार राजा कृष्णदेव राय के नगर में बहुत से चूहे आ गए। राजा ने हर घर में एक बिल्ली और दूध

के लिए एक गाय दे दी। राजा ने तेलानीराम को भी बिल्ली और एक गाय दी। बिल्लियों के आने से नगर में चूहे बहुत कम हो गए पर बिल्लियाँ दूध पीने के कारण मोटी व सुस्त हो गईं। एक दिन राजा सभी के घर गए तथा पाया कि सभी की बिल्लियाँ मोटी हैं पर तेनालीराम की बिल्ली दुबली-पतली है। पूछने पर तेनालीराम ने कहा कि उसकी बिल्ली दूध ही नहीं पीती। राजा ने तुरंत दूध का कटोरा बिल्ली के आगे रखा पर बिल्ली ने दूध नहीं पीया। सभी हैरान थे तब तेनालीराम ने बताया कि बिल्लियाँ दूध पीकर मोटी व सुस्त होती जा रही हैं तथा उन्होंने चूह पकड़ना भी छोड़ दिया है इसलिए मैंने कुछ दिन अपनी बिल्ली के आगे गरम दूध का कटोरा रखा जिससे उसका मुँह जल गया। तब से उसकी बिल्ली ने दूध पीना छोड़ दिया है। अब वह पहले ही तरह चुस्त हो गई है। राजय यह देखकर बहुत खुश हुआ तथा तेनालीराम को शाबाशी देते हुए बोला कि अगर सेवक ही सुस्त हो जाएगा तो मालिक की रक्षा कौन करेगा इसलिए तेनालीराम ने जो किया सही किया।

* विद्यार्थी तेनालीराम और कृष्णदेव राय से संबंधित कोई अन्य कहानी भी लिख सकते हैं।

(ख) उदाहरण बिंदु

हमारे जीवन में हमारी संगति का बहुत महत्त्व होता है क्योंकि हम अपने मित्रों तथा आसपास के लोगों से बहुत कुछ सीखते हैं। अगर हमारे मित्र बात-बात पर झूठ या लड़ाई करते हैं तो जाने-अनजाने हम में भी झूठ बोलने तथा लड़ाई करने का व्यवहार आ जाता है, जिसके कारण हम अन्य लोगों के सामने बुरे व्यवहार वाले तथा सजा के हकदार बन जाते हैं। अगर कोई व्यक्ति चोरी करता है तो पुलिस भी सबसे पहले पूछताछ उसके मित्रों से करती है। उसके मित्रों को पुलिस स्टेशन बुलाया जाता है तथा कभी-कभी यह भी सुनने को मिलता है कि चोर का मित्र भी चोर होता है। इसलिए अंत में यही कहना उचित होगा कि अपनी संगति यानी अपना उठना-बैठना अच्छे लोगों के साथ रखें ताकि आप में भी अच्छे गुण आएँ।

* विद्यार्थी अपने विचार कक्षा चर्चा में स्वयं रखेंगे। अध्यापक गण उन्हें कक्षा चर्चा में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

अध्याय-7

खड़ी बोली का पहला कवि

अभ्यास: (पेज 51)

मौखिक–

(क) 1. घुड़सवार को बहुत प्यास लगी थी इसलिए वह व्याकुल था।
2. पनिहारिनों ने घुड़सवार को कविता सुनाने के लिए कहा था।
3. चारों पनिहारिनों की पसंद अलग होने पर घुड़सवार ने एक ही कविता में चारों की पसंद की बातें शब्दों में पिरोकर उनकी माँग पूरी कर दी।

लिखित–

1. खुसरो अरबी, फ़ारसी, तुर्की और हिंदी भाषा के विद्वान थे।
2. 'खालकबारी' ग्रंथ में हिंदी, अरबी, फ़ारसी आदि के समानार्थक शब्द एक साथ दिए गए हैं। खुसरो ने यह ग्रंथ इसलिए लिखा क्योंकि पहले बहुत कम हिंदू लोग अरबी तथा फ़ारसी भाषाएँ जानते थे। मुसलमानों को हिंदी सीखने में बहुत कठिनाई होती थी। एक भाषा जानने वाला दूसरी भाषा के शब्दों के अर्थ जान सके।
3. खुसरो की भाषा और आज की हिंदी में यह समानता है कि उन्होंने आज से सात-सौ वर्ष पहले हिंदी भाषा में जो कविता लिखी, उस कविता की भाषा आजकल दिल्ली-मेरठ के आस-पास बोली जाने वाली हिंदी भाषा से मिलती है।
4. खुसरों ने दोसखुने, मुकरियाँ, अनमिल छंद या ढकोसला और पहेलियों के रूप में अपनी रचनाएँ लिखी हैं।

(ख) 1. (क) अलग-अलग (ख) ✓ 2. (ब) घुड़सवार ✓ 3. (ब) दोसखुने ✓
4. (ब) मुकरियाँ ✓ 5. (स) फ़ारसी ✓

(ग) 1. उपलब्ध–प्राप्त 2. औंधा–उलटा 3. गायन–गाना 4. पूत–बेटे 5. नाँव–नौका

(घ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

भाषा ज्ञान–

(क) 1. समानार्थक शब्द 2. जिज्ञासु 3. गायक 4. वादक 5. घुड़सवार

(क) 1. भाववाचक 2. सर्वनाम 3. विशेषण

(ग) 1. मैं फुटबॉल खेल रहा हूँ। 2. पिताजी अखबार पढ़ रहे थे। 3. सौरव वहाँ से चला जाएगा।
4. प्रधानाचार्य ने उसे विद्यालय से निकाल दिया था। 5. वे लोग शाम तक घर लौट आएँगे।

(घ) 1. खुसरो ने दिल्ली पर सात बादशाहों का शासन देखा। 2. पहेली में ही उसका उत्तर होता है।
3. घड़सवार ने पानी पीने की इच्छा प्रकट की। 4. तुम चारों ने अपनी पसंद की कविता सुनी है।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण टिप्पणी

(क) 'अमीर खुसरो' का जन्म सन् 1256 ई. में हुआ था। ये दिल्ली में रहते थे। ये अरबी, फ़ारसी, तुर्की और हिंदी भाषाओं के विद्वान थे। ये इन्होंने अपने जीवन काल में 7 बादशाहों का शासन काल देखा था। इन्होंने 'खालकबारी' ग्रंथ लिखकर भाषाओं के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान दिया था। खुसरो ने करीब 94 ग्रंथों की रचना की थी। ये संगीतज्ञ भी थे। कहा जाता है कि इन्होंने सितार व तबला का अविष्कार किया था। इनके साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन करना था। ये जन भाषा के कवि थे। इनके द्वारा लिखीं मुकरियाँ, ढकोसले तथा पहेलियाँ बहुत प्रसिद्ध हुई थीं। इन्होंने अपनी रचनाओं में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया था। निश्चय ही अमीर खुसरों हिंदी खड़ी बोली के पहले कवि हैं तथा हिंदी साहित्य में उनका सराहनीय योगदान रहा है।

* विद्यार्थी पाठ में दी गई जानकारी के आधार पर स्वयं एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखेंगे। (अमीर खुसरो पर)

अध्याय-8

भारत की सांस्कृतिक एकता

अभ्यासः (पेज 60)

मौखिक–

(क) 1. स्वामी शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में अपने मठ स्थापित किए थे। उत्तर में ज्योतिर्मठ, दक्षिण में शृंगेरी मठ, पूर्व में गोवर्धन मठ और पश्चिम में शारदा मठ।
2. मुसलमान और ईसाई धर्म एशियाई धर्म होने के कारण भारतीय धर्मों से बहुत कुछ समानता रखते हैं।
3. पारसियों और हिंदुओं में अग्नि की पूजा समान रूप से होती है।
4. हिंदुओं और जैनियों में स्वास्तिक चिह्न और ओंकार मंत्र समान रूप से मान्य हैं।
5. राष्ट्रीयता की धारा को प्रबल करने तथा सभी भारतवासी एक ही राज्य में रहें, ऐसे राज्य की स्थापना के लिए राजसूय और अश्वमेघ यज्ञ प्राचीन काल में किए जाते थे। इनके द्वारा टूटी हुई राष्ट्रीय एकता जुड़कर, अविरल धारा का रूप धारण कर लेती थी।
6. हमारे देश में जाति, भाषा और धर्म को लेकर विचारों में भेद हैं। हमारे पूर्व शासकों ने स्वार्थवश इन भेदों का अधिक विस्तार किया जिसके कारण हमारे देश में फूट की बेल पनपी और भेद नीति ने केवल शासकों को फायदा दिया। इस भेद-भाव की नीति ने हम भारतीयों में हीनता की भावना को पैदा किया।
7. भारत-भूमि की नदियों के प्रवाह को विभाजन रेखाएँ बतलाकर तथा भाषा और धर्मों एवं रीति-रिवाजों के भेद को आधार बनाकर हमारी राष्ट्रीयता के विचार को खंडित करने के उद्देश्य से कुछ देश हमारे देश को उपमहाद्वीय कहते हैं।

लिखित–

1. भारतीय सूफ़ी कवियों, जायसी, रहीम, रसखान आदि ने अपनी वाणी से हिंदी की रसमयता बढ़ाई है। रसखान के सवैये तो वास्तव में रस की खान हैं।
2. मैत्री, करुणा, आनंद और उपेक्षा की शिक्षा जैन और बौद्ध धर्मों में समान रूप से प्रतिष्ठित है।

3. राजनीति की अपेक्षा मनुष्य के हृदय के अधिक निकट धर्म और संस्कृति है। जन साधारण को धर्म और उनकी संस्कृति अधिक प्रभावित करती है।
4. भारत के पूर्व शासकों ने हमारी भिन्नताओं को अधिक विस्तार दिया ताकि वे अपना अधिपत्य पूर्ण भारत पर स्थापित कर सकें। अंग्रेज़ों ने भी 'फूट डालो और राज करो' की नीति को अपनाया जिसके परिणाम स्वरूप पाकिस्तान का जन्म हुआ।
5. भारत के सभी धर्म आवागमन में विश्वास रखते हैं तथा प्राय: सभी धर्मों में त्याग, तप और संयम रखने की भावना विद्यमान है। भारत में एक धर्म के अराध्य को दूसरे धर्म में महापुरुष माना जाता है।
6. मनुष्य अपने अवयवों के बाहुल्य और उनके समायोजन और संगठन के कारण जीवधारियों में सबसे विकसित और श्रेष्ठ गिना जाता है।
7. भारत की राष्ट्रीयता को चुनौती देने के लिए विदेशी शासकों ने कभी दिशाओं के आधार बनाकर, कभी धर्म (हिंदु, मुस्लिम, सिख, ईसाई) के भेदों को लेकर, कभी भाषा को लेकर बवंडर उठाए ताकि आपसी झगड़ों और भेदभाव से हमारी राष्ट्रीय एकता को हानि पहुँचे व विदेशी शासक हम पर राज करते रहें।

(ख) 1. (ब) एक केंद्रीय भाषा 2. (स) मूर्खता 3. (अ) अपने आप को
4. (ब) सांस्कृतिक 5. (अ) आवागमन में 6. (स) हिंदू

(ग) 1. यूरोप से पहले ईसाई धर्म को– दक्षिण भारत में स्थान मिला है।
2. ईसाइयों की क्षमा और दया– बौद्ध धर्म से मिलती-जुलती है।
3. मराठी और हिंदी की– लिपियाँ भी समान हैं।
4. उर्दू का लिपि भेद होते हुए भी– हिंदी के साथ भाषा में साम्य है।
5. भगवान बुद्ध तो– अवतार ही मानें जाते हैं।

(घ) 1. इन पंक्तियों से लेखक कहना चाहता है कि भारतवासियों का एक जातीय व्यक्तित्व है। यह व्यक्तित्व हमारे रहन-सहन के तरीकों, रीति-रिवाजों, उठने-बैठने के ढंग, वेश-भूषा, साहित्य, संगीत और कला में साफ़ झलकता है। यानी अलग-अलग होते हुए भी हमने सभी धर्मों की अच्छी बातों को, सभी संस्कृतियों, भाषाओं आदि को अपनाकर अपने भारत को एकता के सूत्र में पिरोया है। तभी हम भारतवासियों की एक अलग पहचान पूरे संसार में बन गई है।

विशेष – भाषा संस्कृतनिष्ठ है।
– भाषा शैली सरल, सहज और प्रवाहमयी है।
– लेखक ने भारतीय एकता के अखंडित रहने के कारणों पर प्रकाश डाला है।

2. इन पंक्तियों के द्वारा लेखक कहना चाहता है कि जैसे केंचुए की त्वचा ही उसकी ज्ञानेंद्री है। केंचुए के हाथ-पैर या नाक व आँख नहीं है यानी भेद नहीं है तो क्या वह एक संपन्न जीव है? नहीं। संपन्न केवल मनुष्य है क्योंकि उसके सोचने-समझने की शक्तियों में अंतर है। इसलिए भारत में धार्मिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक भेद होते हुए भी हमारा देश एक संपन्न देश है। हमने इन भेदों (अंतर) को स्वीकार कर उन्हें समान रूप से अपनाया है। इन्हीं भेदों ने हमारे देश को अलग पहचान दी है।

विशेष – उदाहरण के द्वारा लेखक ने भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक व राजनीतिक भेदों को समझाया है। – भाषा सरल व सहज है।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. सरल वाक्य 2. सरल वाक्य 3. संयुक्त वाक्य 4. मिश्रित वाक्य 5. संयुक्त वाक्य

(ख) 1. प्रशंसा + अनीय 2. सोच + अनीय 3. मान + अनीय
4. दया + अनीय 5. पूजा + अनीय

(ग) 1. राष्ट्रीयता 2. प्राकृतिक 3. निमित्त 4. राजनीति 5. संयममयी

(घ) 1. जान – जादूगर की जान तोते में बस्ती थी।
मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप कल आ रहे हैं।
2. फूट – अंग्रेज़ों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई थी।
वर्षा की बूँदें पड़ते ही बीज में से अंकुर फूट पड़ा।

3. जल – मुझे एक गिलास स्वच्छ जल दे दीजिए।
कुछ लोग आपकी तरक्की देखकर जल गए हैं।

4. उत्तर – इस प्रश्न का उत्तर स्वयं लिखें।
इसका घर उत्तर की तरफ़ है।

5. पूर्व – आपसे पूर्व मैं यहाँ आया था।
सूरज पूर्व से निकलता है।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) हमारी एकता के मूल सूत्र हमारे धर्मों में, संस्कृति में व भाषाओं में है। हमारे धर्म चाहे अलग-अलज हैं परंतु उनमें दी गई शिक्षा कुछ मान्यों में एक-सी है। इसके अलावा कई धार्मिक ग्रंथों में दूसरे धर्म के संतों की वाणी को अपनाया गया है, जिससे पता चलता है कि हम सब बिना भेदभाव के एक-दूसरे को अपना रहे हैं। हमारी भाषाओं में भी अधिकत्तर भाषाओं का जन्म संस्कृत भाषा से हुआ है इसलिए हिंदी भाषा में संस्कृत तथ उर्दू के कुछ शब्दों का प्रयोग उनके मूल रूप में किया जाता है। यह भी हमें एकसूत्र में पिरोता है तथा अनेकता में एकता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। हमारी विभिन्न संस्कृतियाँ भी हमें एकता के सूत्र में पिरोती हैं। दीपावली, होली जैसे ज्यौहार हम सभी मनाते हैं और कई ऐसे त्योहार हैं जो अलग-अलग नाम से व अलग-अलग तरीके से मनाए जाते हैं पर उनका उद्देश्य एक होता है जैसे लोहड़ी पंजाब में तो मकर संक्रांति उत्तर प्रदेश में फसलों के कटने की खुशी में मनाए जाते हैं। इस प्रकार हमारा मकसद एक है पर तरीके भिन्न।

* विद्यार्थी इस विषय पर अपने विचार स्वयं सोचकर बताएँगे।

(ख) भारत की सांस्कृतिक एकता को बनाए रखने में हमारे धर्म गुरुओं और संत-महात्माओं ने बहुत अधिक योगदान दिया है। हमारे सभी धर्मों में त्याग, तप और संयम की भावना प्रमुख रही है। एक धर्म के अराध्य को दूसरे धर्म में महापुरुष माना गया है। सिख गुरुओं ने हिंदु धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण तक त्याग दिए। गुरु गोविंद सिंह ने अपने पिता, अपने बच्चे तथा खुद को भी हिंदू धर्म की रक्षा के लिए न्योछावर कर दिया। हमारे धार्मिक ग्रंथों में भी विभिन्न महात्माओं की वाणी को आदर सहित अपनाया गया है जैसे 'गुरु ग्रंथ साहिब' जी में कबीर की वाणी को आदर सहित सुरक्षित रखा गया है यह हमारी एकता को दर्शाता है। 'दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो, जैसा तुम दूसरों से अपने प्रति चाहते हो?– ईसा मसीह का यह कथन महाभारत के -आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' का ही पर्याय है। भारतीय सूफ़ी कवियों ने भी अपनी-अपनी वाणी में हिंदू परंपराओं, कथाओं, विचारों, देवी-देवताओं और प्रतीकों के समावेश हुए हैं। जाससी, रसखान और रहीम आदि अनेक मुसलमान कवियों ने अपनी वाणी से हिंदी की रसमयता बढ़ाई है। रसखान ने मुसलमान होते हुए भी श्री कृष्ण का गुणगान अपनी रचनाओं में बहुत किया है। सभी काव्य ग्रंथ चाहे वे उत्तर भारत के हों या दक्षिण भारत के, रामायण और महाभारत को अपना प्रेरण स्रोत बताते रहे हैं। स्वामी शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में अपने मठ स्थापित किए थे। ये भारत की एकता के परिचायक चिह्न हैं। बंगाल के चैतन्य महाप्रभु के संप्रदाय ने भी मथुरा-वृंदावन में अपनी शिष्य-परंपरा स्थापित की है। ये सभी हमारी राष्ट्रीय एकता के परिचायक हैं। अंत में हम कह सकते हैं कि हमें एकता के सूत्र में बाँधने में हमारे धार्मिक गुरुओं व महात्माओं का विशेष योगदान हमेशा से रहा है।

* विद्यार्थी पाठ के आधार पर अपना उत्तर स्वयं लिखेंगे।

(ग) पाठ के आधार पर जो तथ्य रखे गए हैं, वे बिलकुल सही हैं। हमारे देश में विभिन्न जातियाँ हैं तथा सभी में भेद हैं परंतु हमारे धर्मों ने तथा हमारे समाज ने इन सभी भेदों को अपनाकर हमारे देश को एक अलग पहचान दी है। हमारे देश में बोली जाने वाली खासकर उत्तर भारत में बोली जाने वाली भाषाएँ संस्कृत से निकली हैं। केवल लिपियों का भेद हैं। हमारे लेखक व कवियों ने हिंदी, उर्दू और अन्य भाषाओं में अपने ग्रंथ लिखे हैं तथा विभिन्न भाषाओं की शब्दावली का अपनी रचनाओं में प्रयोग किया है। हमारे धर्म गुरुओं ने भी सांस्कृतिक एकता को बनाए रखने के लिए सभी धर्म गुरुओं की सीख को अपनाने का आदेश दिया है। बहुत से ध र्म गुरुओं ने रामायण व महाभारत जैसे महान ग्रंथों को प्रेरणा स्रोत बताया है तो 'गुरु ग्रंथ साहिब' जी ने संत कबीर की वाणी को अपने ग्रंथ में स्थान भी दिया है। हमारे बौद्ध, जैन धर्म ने अहिंसा और क्षमा

के मार्ग को अपनाने की सलाह दी है। ये दोनों भाव हमारे अन्य धर्मों में भी समान रूप से अनुग्रहित किए गए हैं। भविष्य में भारत अगर प्राचीन काल से तैयार की गई इस एकता की पृष्ठभूमि को अपनाता रहा तो हमारा देश पूरे विश्व में राष्ट्रीय एकता की एक मिसाल ही सिद्ध होगा। हमारी संस्कृति एकलौती ऐसी संस्कृति होगी जिसमें सभी धर्म समान रूप से विकसित होंगे तथा धर्म के नाम पर दंगों से दूर रहेंगे। पर जहाँ हमने अपने धर्म को प्रमुख साबित करने की कोशिश की वहीं हमारी यह सांस्कृतिक एकता समाप्त होने में ज़्यादा देर नहीं लगेगी।

* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें।

अध्याय-9

बिजली और ऊर्जा की बचत

अभ्यास: (पेज 66)

मौखिक–

(क) 1. हमारे देश में बहुत से शहर व गाँव ऐसे हैं, जहाँ केवल कुछ घंटे के लिए ही बिजली आती है।
2. जहाँ बिजली कम आती है वहाँ के बच्चे मोमबत्ती की रोशनी में पढ़ते हैं, लोग फ़्रिज का ठंडा पानी नहीं पी पाते तथा ए.सी. या कम्प्यूटर जैसी चीज़ों के प्रयोग से वंचित रह जाते हैं।
3. सी.एफ.एल बल्बों के प्रयोग से बिजली की काफ़ी बचत की जा सकती है।

लिखित–

(क) 1. – प्रयोग न होने पर घर की लाइट और पंखें बंद कर देने चाहिए।
– पानी लेने के बाद या सामान निकालने के बाद फ़्रिज को बंद कर दें।
– सी.एफ.एल बल्बों का प्रयोग करें।
– टी.वी. देखने के बाद उसे बंद अवश्य करें।
– घर में अपने परिवार वालों को तथा अपने मित्रों, रिश्तेदारों को बिजली की बचत करने के लिए जागरुक करें।
2. पूल सिस्टम में अगर आपने और आपके आसपास रहने वाले कुछ लोगों ने एक ही जगह पर जाना है तो सभी अलग-अलग कारों में न जाकर एक ही कार में जाएँ। इससे पेट्रोल की बचत होगी व यातायात भी सही चलेगा।
3. सरकार ने पेट्रोल की बचत के लिए गाड़ियों में सी.एन.जी. के अधिक प्रयोग पर बल दिया है। तभी सी.एन.जी के दाम, पेट्रोल के दाम से काफ़ी कम हैं, इसके अलावा पूल सिस्टम पर बल दिया गया है, सौर ऊर्जा के प्रयोग पर अधकि बल दिया गया है। सोलर कुकर, सोलर लैंप, हीटर, इनवर्टर आदि बनाए गए हैं। गाँवों में बायोगैस प्लांट लगाए गए हैं।
4. सोलर कुकर, लैंप, हीटर, इनवर्टर, सोलर पंप, सोलर वॉटर हीटर, सोलर पावर्ड वॉशर आदि बनाए गए हैं।
5. बायोगैस का प्रयोग अधिकत्तर गाँवों में किया जाता है। वहाँ ये प्लांट आसानी से लगाए जा सकते हैं।

(ख) 1. (स) दोनों ✓ 2. (अ) स्वस्थ शरीर ✓ 3. (स) सऊदी अरब ✓

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. टी.वी. 2. पेट्रोल 3. सूरज / सूर्य

(ङ) 1. साइकिल 2. पेट्रोल 3. बायोगैस 4. विकल्प 5. बिजली
6. पीढ़ी 7. हवाई जहाज़ 8. बल्कि 9. गाँव 10. स्वास्थ्य

भाषा ज्ञान–

(क) 1. लिए (संप्रदान) 2. ने (कर्ता) 3. से (करण)
4. का (संबंध) 5. पर (अधिकरण) 6. की (संबंध)

(ख) 1. मालूम – नामालूम 2. विकास – पतन 3. स्वस्थ – अस्वस्थ

4. बचत – खर्च 5. आसानी – मुश्किल

(ग) 1. सामान– बाज़ार से आज बहुत सारा सामान लाना है।
2. योगदान– इस कार्य को पूरा करने में तुम्हारा योगदान सराहनीय है।
3. विकास– हमारा देश दिन-ब-दिन विकास कर रहा है।
4. साइकिल– मुझे तुम्हारी साइकिल बहुत पसंद है।
5. मोमबत्ती– जहाँ बिजली नहीं आती वहाँ बच्चे मोमबत्ती की रोशनी में पढ़ते हैं।
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) किसी वस्तु के कार्य करने की क्षमता को उस वस्तु की ऊर्जा कहते हैं। आजकल अधिकांश गतिविधियों के लिए ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। इसके उपयोग से हम अपने कार्य सरलता से कर पाते हैं। हम ऊर्जा को जलावन की लकड़ी, जीवाश्म ईंधन एवं विद्युत के रूप में उपयोग करते हैं इससे हमारा जीवन आरामदायक और सुविधाजनक बनता है।
* विद्यार्थी स्वयं सोचकर ऊर्जा को परिभाषित करेंगे।

(ख) उदाहरण उत्तर
ऊर्जा के साधन– जलावन, उपले, कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और बिजली
गैर परंपरागत– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस और परमाणु ऊर्जा
* विद्यार्थी स्वयं ऊर्जा के साधनों के नाम चित्र सहित पुस्तिका में चिपकाएँगे।

(ग) पेट्रोल-डीज़ल के बचत नियम
1. आवश्यकता होने पर ही पेट्रोल या डीज़ल गाड़ी में भरवाएँ।
2. पूल सिस्टम नियम अनिवार्य करें।
3. कार में एयर कंडीशनर का प्रयोग कम करें।
4. गाड़ियों की गति स्थिर रखें। ज्यादा धीरे-धीरे और तेज़ गाड़ी चलाने से ईंधन की खपत बढ़ती है।
5. ट्रैफ़िक सिग्नल लाल होने पर इंजन बंद कर दें।
6. सरकारी बस, ट्रेन और गाड़ियों का प्रयोग करने का नियम बनाएँ।
* विद्यार्थियों को नियम स्वयं सोचकर अपने मित्रों के समक्ष प्रस्तुत करने हैं।

अध्याय-10

भगत सिंह के पत्र

अभ्यास: (पेज 71)

मौखिक–

(क) 1. प्रस्तुत दोनों पत्र भगत सिंह जी के द्वारा अपने पिता को लिखे गए हैं।
2. भगत सिंह के यज्ञोपवीत के समय यह ऐलान किया गया था कि भगत सिंह को देश-सेवा के लिए न्योछावर कर दिया है।
3. भगत सिंह वालिदा को साथ लाने से इसलिए मना करते हैं क्योंकि अपनी माँ को रोता हुआ देखकर भगत सिंह को तकलीफ़ होगी और वे भी नहीं चाहते कि उनकी माँ उन्हें जेल में इस हालत में देखें।
4. भगत सिंह ने अपने पिता को पत्र कांग्रेस के दफ़्तर वाले पते पर लिखा था।

लिखित–

1. भगत सिंह ने अपने प्रथम पत्र में अपने जीवन के एकमात्र उद्देश्य-देश की आज़ादी और देश सेवा के लिए अपना जीवन तक न्योछावर करने की बात अपने पिता को याद दिलाई है। उन्होंने पत्र में बापू जी अपने दादाजी को कहा है।
2. दूसरे पत्र में भगत सिंह पर सेंट्रल असेंबली में धमाका करने तथा पुलिस अधिकारी सांडर्स की हत्या से संबंधित चलाए जा रहे मुकदमे के बारे में बताया गया है। भगत सिंह के अनुसार उनकी फाँसी पहले से निश्चित थी फिर फ़ालतू में मुकदमे का ड्रामा किया जा रहा था।

3. भगत सिंह ने पत्र में गीता रहस्य, नेपोलियन का जीवन-परिचय और अंग्रेज़ी के कुछ उपन्यास लाने का आग्रह अपने पिता से किया था।
4. भगत सिंह ने जब अमृतसर में हुए जलियाँवाला बाग हत्याकांड देखा था तथा बाद में किसानों के साथ भी भेदभाव होते हुए देख तो उन्होंने स्वयं को स्वतंत्रता और देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया। उनके दादाजी, पिताजी और भाई भी स्वतंत्रता आंदोलनों में भाग लेते रहते थे। इस पारिवारिक परिवेश ने भी उनकी बुद्धि पर गहरा प्रभाव डाला। उनके दादाजी ने तो बचपन में ही उन्हें देश सेवा के लिए अर्पित कर दिया था इसलिए भगत सिंह ने भी खुद को देश स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया।
5. भगत सिंह जी को पता था कि उनकी माँ और घर के अन्य सदस्य जब उन्हें जेल में इस हालत में देखेंगे तो वे दुखी हो जाएँगे। भगत सिंह जी किसी को दुखी नहीं करना चाहते थे, खासकर अपनी माँ को इसलिए उन्होंने अपने पिता को अकेले आने के लिए कहा।

(ख) 1. (ब) द्वितीय ✓ 2. (अ) 26 अप्रैल, 1929 ✓ 3. (अ) दिल्ली ✓

(ग) 1. प्रतिज्ञा 2. ड्रामा 3. फ़िक्र 4. मुलाकात 5. अच्छा

(घ) 1. सिद्धांत 2. शायद 3. व्यवहार 4. महत्त्व 5. विषयों
6. अत्यधिक 7. जेल 8. न्योछावर 9. स्थानांतरित 10. माँ

भाषा ज्ञान–

(क) 1. उम्मीदें 2. वीरों 3. हालातों 4. प्रतिज्ञाएँ 5. कोशिशें

(ख) संज्ञा– हवालात, भगत सिंह, कपड़े, दिल्ली, जेल
सर्वनाम– मेरी, हम, यह, आपसे, आपको, मैं
विशेषण– खास, अच्छा, एक, ज़्यादा, छोटा

(ग) 1. उसूल– मेरे पिताजी का उसूल है कि वे सुबह सैर करने के बाद ही नाश्ता करते हैं।
2. ताबेदार– भगत सिंह एक ताबेदार (आज्ञा मानने वाला) पुत्र थे।
3. फ़िक्र– मेरी माँ को मेरी बहुत फ़िक्र है।
4. मशविरा– भगत सिंह अपने पिता से किसी बात पर मशविरा लेना चाहते थे।
5. इंतज़ाम– पुलिस अधिकारियों ने भगत सिंह की फाँसी का इंतज़ाम पहले से ही कर रखा था।
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

(घ) 1. इच्छाएँ 2. अत्यंत 3. जेल 4. समय 5. परेशानी

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) 1. भगत सिंह– शहीद भगत सिंह का जन्म पंजाब में 28 सितंबर 1907 को हुआ था। इसने पिता व दादाजी स्वतंत्रता सेनानी थे। किशोरावस्था में पढ़े यूरोपीय आंदोलन व मार्क्सवादी विचारों ने इन्हें प्रभावित किया। 12 वर्ष की उम्र में इन्होंने जलियाँवाला बाग हत्याकांड देखा। इन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़कर ''नौजवान भारत सभा'' का गठन किया। 17 दिसंबर, 1928 को अपने साथियों के साथ इन्होंने 'सांडर्स' की हत्या की थी। 8 अप्रैल, 1929 को दिल्ली असेंबली में बम फोड़ने की सज़ा में इन्हें फाँसी दी गई थी।
2. चंद्रशेखर आज़ाद– इनका जन्म 23 जुलाई, 1906 को मध्यप्रदेश में हुआ था। ये एक बहादुर व क्रांतिकारी व्यक्ति थे। इन्होंने अंग्रेज़ों द्वारा किए जा रहे अमानवीय व्यवहार और अनुचित तरीके से कब्ज़ा करने के प्रयासों के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी थी। ये युवाओं में बहुत प्रसिद्ध थे। इन्होंने बहुत कम उम्र में ही ब्रिटिश विरोधी आंदोलनों में भाग लेना शुरू कर दिया था। 27 फरवरी, 1931 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में अल्फ्रेड पार्क में इन्होंने खुद को गोली मार ली थी और शहीद हो गए थे।
3. सुखदेव– सुखदेव एक भारतीय क्रांतिकारी थे। इनका पूरा नाम सुखदेव थापर था। इनका जन्म 15 मई, 1907 को लुधियाना में हुआ था। सुखदेव बचपन से ही देश के प्रति संवेदना रखते थे। इन्होंने

''लाहौर नेशनल कॉलेज'' में पढ़ाई की थी। सुखदेव ने भारत को ब्रिटिश राज से स्वतंत्र कराने का संकल्प लिया था। सुखदेव, भगत सिंह और राजगुरु बहुत अच्छे दोस्त थे। सुखदेव को भगत सिंह और राजगुरु के साथ 23 मार्च, 1931 को फाँसी दे दी गई थी।

* विद्यार्थी स्वयं किन्हीं तीन क्रांतिकारियों के चित्र चिपकाकर उनके बारे में टिप्पणियाँ कार्य पुस्तिका में लिखेंगे।

(ख) * यह प्रश्न विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

अध्याय-11

अनमोल समय

अभ्यास: (पेज 76)

मौखिक–

(क) 1. मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु आलस है। इसी के कारण हम समय के अभाव का रोना रोते हैं।
2. विद्यार्थियों को अपने जीवन में समय विभाजन का महत्त्व पहचानना चाहिए।
3. समय का सदुपयोग करके हम अपनी परेशानियों से छुटकारा पा सकते हैं।

लिखित–

1. समय का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है। बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता इसलिए समय का सदुपयोग करें।
2. आलस्य के कारण ही हम अपना कार्य समय पर नहीं कर पाते हैं। हम भूल जाते हैं कि समय किसी के लिए नहीं रुकता व आलस करके काम को आगे-आगे टालते जाते हैं जिसके कारण हम समय पर अपना काम समाप्त नहीं कर पाते हैं।
3. प. नेहरु और गांधी जी के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि जीवन में सफलता पाने के लिए समय का सदुपयोग करना बहुत आवश्यक है। हमें सोच-समझकर समय को विभाजित करना चाहिए।
4. अगर हम समय का सदुपयोग करेंगे तो हमारे सभी काम उचित समय पर खत्म हो जाएँगे तथा हम अन्य कार्यों की तरफ़ पूरा ध्यान दे पाएँगे। अगर हम समय का उचित विभाजन नहीं करेंगे तो हमारे सभी कार्य समय के अभाव के कारण अधूरे रह जाएँगे।
5. विद्यार्थियों को समय विभाजन करना ज़रूर आना चाहिए क्योंकि उन्हें विद्यालय में दी गई समयावधि में ही सारे कार्य करने होते हैं और साथ-ही-साथ व्यावहारिक ज्ञान भी पाना होता है। जो विद्यार्थी अपना काम समय पर कर लेते हैं, उन्हें परीक्षा में अच्छे अंक मिलते हैं तथा वे सबके प्रिय बन जाते हैं।

(ख) 1. (ब) कीमती ✓ 2. (अ) आलस्य ✓ 3. (ब) प्रतिदिन ✓
4. (स) व्यस्त ✓ 5. (ब) प्रतीक्षा ✓

(ग) 1. समयाभाव 2. सभा-सम्मेलनों 3. समय 4. सदुपयोग 5. महत्त्व

(घ) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

भाषा ज्ञान–

(क) 1. ध्यानपूर्वक 2. तेज़ 3. परसों 4. अधिक 5. धीरे-धीरे

(ख) 1. दुख 2. नाटा/बौना 3. सही 4. असंभव 5. हँसना

(ग) 1. व्यक्ति 2. सदुपयोग 3. आलसीपन 4. दैनिक 5. शिकायत

(घ) 1. समय– वक्त, काल, अवधि 2. पत्र– चिट्ठी, खत 3. उत्तर– जवाब, समाधान
4. वक्त– समय, अवधि, काल 5. रात– निशा, रात्रि

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण अनुच्छेद

(क) समय– एक अमानत (अनुच्छेद)

'समय' एक ऐसी अमानत है जो हमारे दैनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अगर आपके

पास समय है तो आपके पास सब कुछ है। हमें अपने दैनिक कार्यों को करने के लिए समय चाहिए, जीवन में प्रगति करने के लिए समय चाहिए, अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए समय चाहिए। सभी को एक दिन में 24 घंटे मिलते हैं लेकिन इसे प्रयोग करने का तरीका सबका अलग-अलग होता है। समय बहुत शक्तिशाली होता है। अगर हम समय का सदुपयोग नहीं करते तो हमें असफल होने से कोई नहीं रोक सकता है। हमें समय का सदुपयोग करने के लिए सबसे पहले महत्त्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता देकर कर लेना चाहिए। हमें सोचने से ज़्यादा काम करना चाहिए। हमें पहले से योजना बनाकर कार्य करना चाहिए ताकि समय बर्बाद न हो। समय हमारे जीवन की पूंजी है। अगर हम इस पूंजी का उचित प्रयोग करेंगे तो यह बढ़ेगी, नहीं तो यह पल भर में खत्म हो जाएगी। समय के साथ इसके मूल्य को समझें ताकि आगे चलकर हमें पछताना न पड़े।

* विद्यार्थियों को अनुच्छेद स्वयं लिखने के लिए कहें।

(ख) 1. जो अपना भविष्य आनंदमय बनाना चाहते हैं, उन्हें अपने वर्तमान समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए।

2. आप अपना पैसा बर्बाद करके केवल पैसा खोएँगे, लेकिन अपना समय बर्बाद करके आप अपने जीवन का एक हिस्सा खो देंगे।

* विद्यार्थियों को स्वयं कोई दो सुविचार (समय के महत्त्व पर) लिखने के लिए कहें।

अध्याय-12

वह देश कौन-सा है

अभ्यासः (पेज 80)

मौखिक–

(क) 1. संसार में सबसे पहले ज्ञान का दीपक या कहें कि लोगों को सभ्य 'भारत' ने बनाया। भारतवासी सबसे सभ्य व ज्ञानी लोगों की श्रेणी में आते हैं।

2. समुद्र हमारे देश 'भारत' के चरण निरंतर धो रहा है।

3. भारती धरती अनंद धन से भरी पड़ी है। हमारे देश की धरती बहुत उपजाऊ है। भारत की मिट्टी उपजाऊ होने के साथ ही विविध उत्पादकता से सम्पन्न है। ये हमारे देश का धन है तथा इससे केवल भारत की धरती ही भरी हुई है।

4. कवि ने संसार में सबसे शिरोमणी यानी जिस देश को सर्वश्रेष्ठ माना है, वह हमारा देश 'भारत' है।

5. हमारा देश मन को मोहित करने वाली प्रकृति की गोद में बसा हुआ है।

लिखित–

1. जगदीश का दुलारा हमारा प्यारा देश भारत है।
2. दिन-रात हमारे देश की धरती पर खिले सुंदर और सुगंधित फूल हँस रहे हैं।
3. हरियाली हमारे देश के मैदानों में, बड़े व घने वनों में और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर लहकती है।
4. हमारे देश में हरे-भरे वन, सुंदर-सुगंधित फूल, मैदान, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। इन्हें देखकर हमें बहुत आनंद आता है इसलिए हमारे देश की प्रकृति बहुत आनंदमय है।
5. हमारे देश के अंग-अंग में यानी हमारे देश के हर राज्य की अपनी-अपनी विशेषता है। कहीं पर रसीले फलों की भरमार है तो कहीं सब्ज़ियों की और कहीं अनाज का भंडार है।

(ख) 1. (ब) की गोद में ✓ 2. (अ) स्वर्ग-सा ✓ 3. (ब) हिमालय को ✓
4. (स) अनंत धन से ✓ 5. (ब) ज्ञान दिया ✓

(ग) 1. प्रसून – फूल 2. जगदीश – ईश्वर 3. यशस्वी – महान
4. रत्नेश – समुद 5. गिरि – पहाड़

भाषा ज्ञान–

(क) 1. फल – कंद 2. गिरि – वन

(ख) 1. जातिवाचक – देश, नदियाँ, फल 2. व्यक्तिवाचक – हिमालय, संसार, भारत
3. भाववाचक – हरियालियाँ, आनंदमय, हँस

(ग) 1. स्वदेश – विदेश 2. सुगंध – दुर्गंध 3. अनंत – सीमित

4. स्वर्ग – नरक 5. सभ्य – असभ्य

(घ) 1. पैर – चरण, पग 2. हिमालय – गिरीराज, पर्वतराज 3. सागर – समुद्र, जलधि
4. अमृत – सुधा, सोम 5. धरती – धरा, पृथ्वी

(ङ) 1. मिट्टी – मुझे वर्षा के समय मिट्टी की सौंधी-सौंधी खुशबू बहुत अच्छी लगती है।
2. पृथ्वी – इस पृथ्वी पर अनेकों देश हैं।
3. चरण – मैं अपने माता-पिता के चरण छूकर उनका आशीर्वाद लेना कभी नहीं भूलता।
4. स्वदेश – बहुत से लोगों को मजबूरी में स्वदेश लौटना पड़ा।
5. सुगंध – फूलों की सुगंध से पूरा उपवन महक रहा था।
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) ''जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है।''
इन पंक्तियों में कवि ने दक्षिण भारत की बात की है। अगर हम दक्षिण भारत की तरफ़ देखें तो कन्याकुमारी में हिंदी महासागर है।
भारत विश्व में ऐसा महान देश है, जिसकी महानता को प्रकृति भी स्वीकार करती है। भारत को मान प्रतिष्ठा देने के लिए ही समुद्र बार-बार उसके चरणों को स्पर्श कर खुशी से फूले नहीं समाता है।

* विद्यार्थी अपना आशय स्वयं स्पष्ट करेंगे।

(ख) मेरे अनुसार प्रकृति हमारे देश का गौरव तो हैं, इसके अलावा हमारे देश के सैनिक, भाषा, बेटियाँ और अनेकता में एकता का भाव। हमारे सैनिक दिन-रात कठोर वातावरण में रहकर हमारे देश की रक्षा करते हैं। इनके कारण ही हमारे देश का मुकुट हिमालय सही सलामत है। इनके कारण ही हमारा देश खंडित होने से बचा हुआ है। इसके अतिरिक्त हमारी भाषा 'हिंदी' भी हमारा गौरव है। आजकल बहुत से विदेशी लोग हिंदी भाषा को सीखकर इसका मान बढ़ा रहे हैं। धीरे-धीरे यह भाषा अपना विस्तार कर रही है। हमारे देश में विभिन्न धर्म व सभ्यताएँ हैं परंतु हम सभी एक-दूसरे के धर्म व सभ्यताओं को एक-सा आदर व मान देते हैं। यह भी हमारे देश का गौरांवित करता है। अंत में मैं यही कहूँगी कि प्रकृति के साथ-साथ बहुत-सी अन्य बातें हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं।
* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें।

(ग) * इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं पता करेंगे।

(घ) 'मुकुट' का शाब्दिक अर्थ होता है, किसी के सिर पर रखा 'ताज'। अगर हम अपने देश की भौतिक स्थिति को देखें तो उत्तर में सबसे ऊपर हमें 'हिमालय' पर्वत की दिखता है। यह ऐसा लगता है कि जैसे प्रकृति ने हमारे देश को हिमालय पर्वत के रूप में एक मुकुट पहना दिया है। यह भारत की रक्षा चारों ओर से करता है। यह इतना ऊँचा है कि इसकी ऊँचाई की वजह से कोई दूसरा देश हमारे देश पर आसानी से आक्रमण नहीं कर सकता।
* विद्यार्थी अपना उत्तर स्वयं लिखेंगे।

(ङ) प्रस्तुत कविता में हमारे देश का बहुत सुंदर प्राकृतिक चित्रण किया गया है। जैसे–
1. हिमालय पर्वत 2. विशाल समुद्र 3. पानी से भरपूर नदियाँ 4. रसीले फल
5. हरियाली 6. रंग-बिरंगे फूल 7. उपजाऊ धरती 8. ज्ञानी स्त्री-पुरुष 9. वन
* विद्यार्थी कविता के आधार पर प्राकृतिक चित्रण में क्या दिखाया गया है? स्वयं लिखेंगे।

अध्याय-13

वीर बालक

अभ्यास: (पेज 92)

मौखिक–

(क) 1. तैमूर सन् 1398 में भारत पर आक्रमण करने वाला मंगोल आक्रमणकारी थी।
2. कल्याणी ने मिठाइयाँ अपने बेटे बलकरन की वर्षगाँठ की खुशी में बनाई थीं।

3. बलकरन एक निडर और साहसी बालक था।
4. कल्याणी ग्रामीणों के साथ इसलिए नहीं जाना चाहती थी क्योंकि उसका बेटा बलकरन दूध लेकर घर वापस नहीं आया था।
5. हिंदू ग्रामीण ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि सुजान का घर खास रास्ते से हटकर कोने में था तथा तैमूर के सिपाही सीधे रास्ते से आ रहे थे।

लिखित–

1. कल्याणी बलकरन की माँ थीं।
2. खीर बनाने के लिए कल्याणी दूध का इंतज़ार कर रही थी।
3. जफ़र अली का मुख्य उद्देश्य सोना-चाँदी लूटना था।
4. तैमूर तीन दिनों से भूखा-प्यासा था।
5. तैमूर ने शाम तक अमरकोट पहुँचने का आदेश दिया था।
6. बलकरन ने तैमूर के समक्ष उसके गाँव से बाहर चले जाने की इच्छा व्यक्त की थी।
7. तैमूर ने बलकरन को उसकी बहादुरी और निडरता के लिए शाबाशी दी व उसे सलाम किया। तैमूर बहादुर लोगों की इज्जत करता था तथा वह उनकी बहादुरी को सलाम करता था।

(ख) 1. (ब) चाकू ✓ 2. (ब) सिपाही ✓ 3. (ब) मिठाइयाँ ✓
4. (अ) तलधर में ✓ 5. (स) सुजान ✓

(ग) 1. बलकरन ने कल्याणी से कहा। 2. मुसलमान ग्रामीण ने कल्याणी से कहा।
3. मुबारक ने जफ़र से कहा। 4. बलकरन ने तैमूर से कहा। 5. बलकरन ने तैमूर से कहा।

(घ) 1. मैंने उसे अपनी उँगली– चीरकर दिखला दी और वह चौंक पड़ा।
2. तेरी बारहवीं वर्षगाँठ– ऐसे ही मनाई जाएगी।
3. यह तेरे खून में डूबकर– तुझे मेरा नाम बताएगी।
4. पर पहले मैं दूध पीऊँगा– गला सूख रहा है।
5. लेकिन तेरी बहादुरी देखकर– मैं तुझे दुश्मन नहीं मानता।

भाषा ज्ञान–

(क)

1.	बिलकुल	ताज़ी	मिठाइयाँ
2.	छोटा-सा	बहादुर	दोस्त
3.	पूरा	बेवकूफ़	आदमी
4.	बहुत	ऊँचा	पेड़
5.	बेहद	स्वादिष्ट	खाना

(ख) 1. स्तब्धता 2. दृढ़ता 3. महानता 4. अज्ञानता

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण उत्तर

अगर तैमूर के सिपाही तलधर में चले जाते तो वे वहाँ जितने भी ग्रामीण लोग छिपे बैठे थे उन्हें लूट लेते क्योंकि तैमूर का मकसद भारत का सोना-चाँदी लूटकर अपने आपको शक्तिशाली करना था।

* विद्यार्थी इसका उत्तर स्वयं लिखेंगे।

(ख) उदाहरण उत्तर

तैमूर के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य अपने साम्राज्य को बढ़ाना था। वह अफ़गानिस्तान के बाद हिंदुस्तान पर कब्ज़ा करना चाहता था। इस कारण वह भारत के विभिन्न गाँवों में जाकर वहाँ की जनता को लूट रहा था ताकि उसका ख़जाना भर सके। उसका मुख्य उद्देश्य केवल सोना-चाँदी लूटकर देश को कंगाल करना था।

* विद्यार्थी पाठ के आधार पर अपना उत्तर स्वयं बताएँगे।

(ग) अगर बलकर निर्भीकता से तैमूर का सामना करने की जगह, डरकर भागता तो अवश्य ही वह तैमूर के द्वारा मारा जाता। तैमूर बहादुर लोगों की कदर करता था। जब उसने एक बच्चे को बहुत निडरता से सामना करते हुए देखा

तो उसे बहुत खुशी हुई इसलिए उसने बलकरन की बातों को ध्यान से सुना व उसकी इच्छा पूरी करने की बात की। पर अगर बलकर कुछ न कहता तो तैमूर या तो उसे मार देता या उससे दूध छीनकर उसे भगा देता। हो सकता है कि तैमूर उसे बंदी बनाकर उससे घोड़ों को नहलाने या अन्य सेवकों वाले कार्य कराता।

* विद्यार्थियों को स्वयं कल्पना कर अपना उत्तर बताने के लिए कहें।

(घ) मेरा जन्मदिन (अनुच्छेद)

पिछले साल मैंने अपनी वर्षगाँठ ठीक उसी तरह मनाई, जिस तरह मैं मनाना चाहती थी। मैंने अपने जन्मदिन पर अपने दोस्तों के लिए शानदार पार्टी की व्यवस्था की थी। मैंने अपनी माँ के साथ मिलकर अपने दोस्तों के लिए निमंत्रण कार्ड बनाए थे। मैंने और मेरे पिताजी ने घर को गुब्बारों और फूलों से खूब अच्छे से सजाया था। मेरी माँ ने मेरे लिए खीर भी बनाई थी। पार्टी शुरू होने से पहले हम सभी मंदिर भी गए थे। पार्टी में मेरे सभी दोस्तों ने अपना टैलेंट प्रस्तुत किया था। उसके बाद हमने केक काटा और अपने मनपसंद गीतों पर खूब नृत्य किया। दोस्तों के जाने के बाद मेरे पिताजी ने मुझे मेरी साइकिल दिखाई। साइकिल देखकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। अपने मित्रों के उपहार देखते-देखते कब ग्यारह बज गए, मुझे पता ही न चला। कुछ समय माता-पिता के साथ बातचीत करने के बाद मैं सोने के लिए अपने कमरे में चली गई। वह जन्मदिन बहुत अच्छा था।

* विद्यार्थी अपने किसी जन्मदिन के बारे में स्वयं सोचकर लिखेंगे।

अध्याय-14

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

अभ्यास: (पेज 98)

मौखिक–

(क) 1. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय सामाजिक संस्कृति से ओत-प्रोत एक प्रख्यात शिक्षाविद्, महान दार्शनिक तथा उत्कृष्ठ वक्ता थे।

2. विवाह के समय डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की आयु सोलह वर्ष तथा उनकी पत्नी की आयु दस साल थी।

3. डॉ. सर्वपल्ली की आरंभिक शिक्षा तिरुपति के लुथर्न मिशन स्कूल में तथा वेल्लूर में हुई। उन्होंने मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज में भी शिक्षा प्राप्त की।

4. डॉ. सर्वपल्ली जी की पत्नी का नाम 'सिवाकामू' था।

5. सन् 1909 में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कला में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की थी।

लिखित–

1. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन में एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे इसलिए उन्होंने अपना जन्मदिन अपने व्यक्तिगत नाम की जगह संपूर्ण शिक्षक जाति को सम्मानित किए जाने के उद्देश्य से 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी। हर साल 5 सितंबर को हम 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाते हैं।

2. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को गैर परंपरावादी राजनयिक इसलिए माना जाता था क्योंकि उनका राजनीति से कोई लेना-देना नहीं था। वे एक प्रख्यात शिक्षक, दार्शनिक तथा विचारक थे। वे कई विश्वविद्यालयों के चांसलर भी थे। उन्हें राजनीति में आने का कोई मन नहीं था।

3. डॉ. राधाकृष्णन को 'भारत रत्न' जैसे सर्वोच्च सम्मान से उनके कार्यों को देखकर सम्मानित किया गया। वे भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, महान दार्शनिक व विचारक थे। उनके इन्हीं गुणों को देखकर उन्हें सर्वोच्च सम्मान से अलंकृत किया गया।

4. सन् 1952 में सोवियत संघ से आने के बाद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए। वे देश के पहले उपराष्ट्रपति थे। इस पद के लिए राधाकृष्णन के चयन ने पुन: लोगों को चौंका दिया। एक गैर राजनीतिक व्यक्ति होते हुए भी उन्होंने अपना पदभार (राज्यसभा अध्यक्ष) बहुत अच्छे से सँभाला। 13 मई, 1952 से 12 मई, 1962 तक उपराष्ट्रपति पद पर रहते हुए उन्होंने उत्कृष्ट कार्य किए। इसके बाद 13 मई, 1962 को देश के दूसरे राष्ट्रपति बनाए गए। उनके गुणों को देखते हुए सन् 1954 में उन्हें भारत रत्न भी दिया गया था। 13 मई, 1967 को वे सेवानिवृत्त हुए थे।

(ख) 1. (स) चालीस ✓ 2. (अ) 1888 ✓ 3. (अ) 1903 ✓
4. (ब) मद्रास ✓

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. राष्ट्रपति 2. वीरास्वामी, एक पुत्री 3. बारह
4. उपराष्ट्रपति 5. 1967

(ङ) 1. स्वतंत्रता के बाद उन्हें– संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य बनाया गया।
2. वे एक गैर– परंपरावादी राजनयिक थे।
3. सन् 1928 में डॉ. राधाकृष्णन की मुलाकात– पं. जवाहरलाल नेहरू से हुई।
4. शादी के समय वह– केवल दस साल की थी।
5. सिवाकामू ने विधिवत्– शिक्षा प्राप्त नहीं की थी।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. डॉ. सर्वपल्ली ने मैनचेस्टर एवं लंदन में व्याख्यान दिए।
2. उनके पिता ने उन्हें लुथर्न मिशन स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा।
3. यहाँ बालक राधाकृष्णन ने 1896 से 1900 तक शिक्षा अर्जित की।
4. ठीक रात्रि बारह बजे उन्होंने अपने संबोधन को विराम दिया।
5. उच्च अध्ययन के दौरान, निजी आमदनी हेतु बच्चों को ट्यूशन पढ़ाते।

(ख) 1. सामाजिक – असमाजिक 2. उच्च – निम्न 3. संपूर्ण – अपूर्ण
4. निर्धन – धनी 5. बचपन – बुढ़ापा

(ग) 1. स्कूल – पाठशाला, विद्यालय, शिक्षालय 2. माता – माँ, जननी, मैया
3. शिक्षक – अध्यापक, गुरु, आचार्य

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण विचार

(क) अगर मुझे देश का प्रधानमंत्री बना दिया जाए तो मैं निम्नलिखित कार्य करूँगी–
1. मैं बालमज़दूरी को बिलकुल बंद करा देती और अगर कोई माता-पिता या दुकानदार किसी को बाल मज़दूर रखता तो उससे भारी जुर्माना लेकर, उसी बालमज़दूर की शिक्षा में लगाया जाता।
2. मैं सभी के लिए केवल दो बच्चे पैदा करने का नियम रखती क्योंकि हमारे देश की जनसंख्या ही हमारे देश की उन्नति में बाधक है।
3. मैं सड़कों पर या फुटपाथ पर लोगों को घर बनाने न देती। सभी को घर देने के बाद (बेघर लोगों को) घर को बेचने का हक केवल सरकार को देती ताकि ये लोग घर बेचकर दोबारा फुटपाथ पर न बैठ जाएँ।
4. हमारे देश के सभी अमीर व्यक्तियों को गरीब परिवारों के लिए 5 छोटे-छोटे घर बनवाने के लिए कहती।
5. मुफ़्त शिक्षा तथा चिकित्सा के लिए विशेष स्कूल व अस्पताल खोलती तथा कभी भी जाकर इन विद्यालयों तथा अस्पतालों की जाँच करती।
6. लोगों की शिकायातों के लिए विशेष नंबर शुरू करती ताकि लोगों की परेशानियाँ दूर कर पाती।

* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं करने के लिए कहें।

(ख) डॉ. सर्वपल्ली द्वारा किए गए महान कार्य–
1. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपने लेखों व भाषणों के द्वारा विश्व को भारतीय दर्शनशास्त्र से परिचित कराया था।
2. वे हमेशा अपने विद्यार्थियों के संपर्क में रहते थे तथा उनमें राष्ट्रीय चेतना बढ़ाते रहते थे।
3. डॉ. राधाकृष्णन अपने राष्ट्रप्रेम के लिए विख्यात थे।
4. वे पेरिस में यूनेस्कों नामक संस्था की कार्यसमिति के अध्यक्ष भी थे। यह संस्था दुनिया भर में लोगों की भलाई के लिए कार्य करती है।

5. वे 1949 से 1952 तक रूस में भारत के राजदूत पद पर रहे। भारत रूस की मित्रता बढ़ाने में उनका भारी योगदान रहा।
6. वे एक महान दार्शनिक, शिक्षाविद और लेखक थे। उन्होंने अपना जन्मदिवस शिक्षकों के लिए समर्पित किया था। हर साल 5 सितंबर सारे भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

* विद्यार्थियों को सूची स्वयं तैयार करने के लिए कहें।

(ग) 1. नाम– डॉ. ए.पी.जे. अबुल कलाम
कार्यक्षेत्र– वैज्ञानिक
2. नाम– कल्पना चावला
कार्यक्षेत्र– अंतरिक्ष यात्री व अंतरिक्ष शटल मिशन विशेषज्ञ
3. नाम– सुभाष चंद्र बोस
कार्यक्षेत्र– क्रांतिकारी

अध्याय-15

तिवारी का तोता

अभ्यासः (पेज 104)

मौखिक–

(क) 1. तिवारी का तोता पिंजरे में रहता था। वह घरवालों से तिवारी की जुबान में बातें करता था।
2. जंगली तोता तिवारी के तोते को आज़ादी के महत्त्व के बारे में बताना चाहता था।
3. जब जंगल का तोता तिवारी के तोते को कहता है कि तेरी आज़ादी का रंग मुर्दा हो चुका है और तेरी आँखें अंधी हो चुकी हैं। तू इस पिंजरे की तारीफ़ कर रहा है, जिसने तेरी देह और आत्मा दोनों को कैद कर लिया है। ये सभी बातें तिवारी का तोता समझ नहीं पाता है।
4. जंगली तोते ने पिंजरे के तोते से कहा कि तुम गुलाम हो क्योंकि तुम वही करते हो जो तुम्हारा मालिक कहता है। सब घरवाले तुमसे इसलिए बात करते हैं क्योंकि तुम मालिक की जुबान बोलते हो। एक दिन मालिक की जुबान बोलना बंद कर दो, कोई भी तुम्हें पसंद नहीं करेगा। तोता यही करता है तथा अगले दिन वह अपने पिंजरे में मृत मिलता है।
5. पूरी बात सुनकर पिंजरे के तोते ने तय किया कि वह अब इंसानों की बोली में ज़वाब नहीं देगा।

लिखित–

1. तिवारी के तोते ने कहा कि उसका मालिक उस पर मेहरबान है। पिंजरे में मुझे खाना-पीना सब मिलता है। जाड़े तथा अँधेरे में मेरी रक्षा भी होती है। मैं पिंजरे के कारण बिल्लियों से भी बच जाता हूँ। मैं कैदी नहीं हूँ। पिंजरे में घूम सकता हूँ, उड़ सकता हूँ, सीटियाँ बजा सकता हूँ इसलिए मैं श्रेष्ठ हूँ।
2. जंगली तोते ने कहा, ''तुझ पर लानत है। तेरी आज़ादी का रंग मुर्दा हो चुका है और तेरी आँखें अंधी हो गई हैं। वरना, तू इस पिंजरे की तारीफ़ न करता, जिसने तेरी देह के साथ-साथ तेरी आत्मा को भी कैद कर लिया है।''
3. पिंजरे का तोता यह सोचता था कि वह कैदी नहीं है क्योंकि वह जब चाहे पिंजरे में घूम सकता है। पंख फैला सकता है। सीटियाँ बजा सकता है। उसे कोई कुछ नहीं कहता तथा पूरे पिंजरे पर उसका राज है।
4. पिंजरे के तोते ने जब तिवारी के बेटे की बात का जवाब नहीं दिया तो उसके बेटे ने सीकें चुभो-चुभोकर तोते के शरीर पर घाव कर दिए जिस कारण तोते की मृत्यु हो गई।
5. जंगली तोते ने ऐसा इसलिए कहा था क्योंकि पिंजरे के तोते को लगता था कि पिंजरे में रहकर उसे सबकुछ मिल रहा था। खाना-पीना, बिल्लियों से रक्षा तथा जाड़े से राहत भी तथा जब वो अपने मालिक का हुक्म मानता था तो मालिक खुश भी होता था। जंगली तोते को लगता था कि खुले आसमान के नीचे पंख फैलाकर उड़ना, अपनी इच्छा से इधर-उधर जाना, अपनी मरज़ी से खाना, अपने रास्ते खुद ढूँढ़ना व किसी के आधीन न रहना ही आज़ादी है, जिससे पिंजरे का तोता वंचित था क्योंकि पिंजरे का तोता इसे गुलामी नहीं मेहरबानी समझ रहा था।
6. पिंजरे का तोता अपने आपको खुशकिस्मत समझता था क्योंकि वह पिंजरे में रहकर खुश था। उसे

पिंजरे में ही सबकुछ मिल रहा था। वह आज़ादी के महत्त्व को नहीं समझ पा रहा था।

7. तिवारी ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसे तोते की मृत्यु का उचित कारण समझ में नहीं आ पाया था। उसे लगा शायद जंगली तोते ने चोंच मार-मारकर उसके तोते को मारा है परंतु उसे यह नहीं पता था कि उसके बेटे ने सीकें चुभो-चुभोकर तोते को मारा था।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. तू हर समय अपने मालिक – के मुँह की तरफ़ देखता है।
2. कौन रात के अँधेरे – और जाड़े में मेरी रक्षा करता?
3. फिर मैं क्यों कर मान लूँ – कि मैं गुलाम हूँ।
4. वह छाती पर घाव खाकर – दूसरी तरफ़ हट गया।
5. इस जंगली तोते को – गुलेल से मारकर उड़ा दो।

(घ) 1. जंगली तोते ने पिंजरे के तोते से कहा।
2. पिंजरे के तोते ने जंगली तोते से कहा।
3. तिवारी ने अपने बेटे से कहा।
4. जंगली तोते ने पिंजरे के तोते से कहा।
5. तिवारी के बेटे ने तोते से कहा।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. नहाकर 2. दौड़कर 3. भागकर 4. मारकर 5. खाकर

(ख) 1. (ब) जातिवाचक ✓ 2. (स) भाववाचक ✓ 3. (अ) व्यक्तिवाचक ✓
4. (ब) जातिवाचक ✓ 5. (अ) व्यक्तिवाचक ✓

(ग)

	मूल शब्द			प्रत्यय
1.	खुश किस्मती	खुशकिस्मत	+	ई
2.	बुराई	बुरा	+	ई
3.	आज़ादी	आज़ाद	+	ई
4.	सभ्यता	सभ्य	+	ता
5.	जंगली	जंगल	+	ई

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण संदेश

लेखक ने इस कहानी के द्वारा हमें संदेश दिया है कि गुलामी की ज़िंदगी चाहे कितनी भी अच्छी क्यों न हो लेकिन आज़ादी का अपना महत्त्व होता है अगर हम आज़ाद हैं तो हमारे जीवन पर हमारा पूरा अधिकार है। हम अपनी इच्छा से सभी कार्य कर सकते हैं लेकिन अगर हम गुलाम हैं तो जब तक हम अपने मालिक की बात मान रहे हैं, तब तक तो सब ठीक है। लेकिन जब हम अपने मन की कोई बात करते हैं तो हमारे मालिक से यह बर्दाश्त नहीं होता तथा हमारा भी वही हाल होता है जो इस कहानी में तोते का हुआ। अंत में कह सकते हैं कि अमीर बनकर गुलाम होना मुझे स्वीकार नहीं पर गरीब रहकर आज़ादी का ज़ीवन मुझे स्वीकार है।

* विद्यार्थी अपने विचार स्वयं लिखेंगे।

(ख) उदाहरण उत्तर

मेरे अनुसार आज़ादी का अर्थ है कि आपको अपनी इच्छा से कहीं जाने की आज़ादी हो, आप अपनी मरज़ी से खा सकते हैं, आपको कार्य करने की तथा विचारों की संपूर्ण आज़ादी हो। चाहे मनुष्य हो या पशु-पक्षी सभी को अपनी आज़ादी प्रिय है। परंतु आज़ादी का यह अर्थ बिलकुल भी नहीं है कि आप किसी को भी मार दें या किसी का भी नुकसान कर दें। आज़ादी का उचित अर्थ बिना किसी को परेशान किए अपनी मरज़ी से कार्य करना या अपने विचार प्रकट करना है। इसका यह अर्थ बिलकुल भी नहीं है कि आप किसी को दुख पहुँचाएँ या किसी की हत्या कर दें या किसी की संपत्ति पर कब्ज़ा कर लें। हमारे संविधान ने हमें आज़ादी का अधिकार देते समय कुछ नियम भी बनाए हैं। हमें उन नियमों के साथ आज़ादी को अपनाना है।

* विद्यार्थी अपने विचार स्वयं प्रस्तुत करेंगे।

(ग) जी हाँ, हमारे माता-पिता तथा हमारे अध्यापक हमें कुछ कार्य करने से मना करते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि हमारे व्यक्तिगत, शारीरिक, मौलिक और बौद्धिक विकास में कोई बाधा न आए। अगर हमारे माता-पिता हमें झूठ बोलने, चोरी करने, गलत संगत में रहने आदि से मना करते हैं तो यह हमारे आज़ादी के अधिकार का हनन बिलकुल भी नहीं है। वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि हम एक अच्छे व सच्चे व्यक्ति बन सकें तथा आगे चलकर हमारा या हमारे कारण किसी अन्य का कोई नुकसान न हो।

* विद्यार्थी स्वयं पता लगाकर बताएँगे कि हमारे माता-पिता व शिक्षक ऐसा क्यों करते हैं?

(घ) 'पराधीन सपने हूँ सुख नाहीं'' (अनुच्छेद)

महाकवि तुलसीदास जी की इस पंक्ति का अर्थ है कि पराधीनता से बड़ा कोई दुख नहीं है। पराधीनता तो पशु-पक्षियों को भी नहीं सुहाती। सोने के पिंजरे में कैद पक्षी भी मुक्ति की आकांक्षा के लिए ही जीते हैं। हमारा देश जब तक अंग्रेज़ों का गुलाम रहा तब तक देशवासी घुटन महसूस करते रहे। पराधीन व्यक्ति का न तो कोई सम्मान करता है न कोई उसकी बात को महत्त्व देता है। ऐसे व्यक्ति का कोई आत्मसम्मान नहीं होता क्योंकि उसे तो अपने स्वामी की या अधिकारी की सैदव जी हजूरी करनी पड़ती है। कहने का अर्थ है कि स्वाधीनता मनुष्य की सहज प्रवृति है और पराधीनता दुखों की जननी। अत: हर व्यक्ति, जाति, समाज और राष्ट्र की यही कोशिश होनी चाहिए कि वह पराधीनता की बेड़ियों में न जकड़ पाए क्योंकि 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।'

* विद्यार्थियों को अनुच्छेद स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें।

अध्याय-16

अकबरी लोटा

अभ्यास: (पेज 115)

मौखिक–

(क) 1. लाला झाऊलाल के घर खाने-पीने की कमी न थी पर सभी पैसे घर खर्च में ही खत्म हो जाते थे। उनके पास रुपये बचते नहीं थे।

2. बिलवासी मिश्र ने झाऊलाल को आश्वासन दिया कि वे रुपये किसी से माँगकर झाऊलाल को दे जाएँगे।

3. बिलवासी मिश्र का इंतज़ार करते हुए झाऊलाल सोच रहे थे कि अगर शाम को बिलवासी मिश्र रुपये का इंतज़ाम न कर पाए या वे न आए तो अगले दिन लाला झाऊलाल अपनी पत्नी से क्या कहेंगे।

4. झाऊलाल के हाथ से छूटकर लोटा नीचे गली में गिर गया था।

5. झाऊलाल इसलिए क्रोधित हो रहे थे क्योंकि बिलवासी जी पैसे देने की जगह अंग्रेज़ की आवभगत में लग गए थे तथा झाऊलाल को कसूरवार करार दे रहे थे।

लिखित–

1. जब झाऊलाल की पत्नी ने उनसे कहा कि अगर वे रुपये नहीं दे सकते हैं तो उनकी पत्नी अपने भाई से रुपये माँग लेगी। यह सुनकर झाऊलाल तिलमिला उठे थे।

2. रुपयों का प्रबंध न होने पर लाला झाऊलाल अपने मित्र पंडित बिलवासी मिश्र जी के पास गए थे।

3. प्यास लगने पर झाऊलाल ने अपने नौकर को आवाज़ दी थी।

4. झाऊलाल को वह लोटा इसलिए पसंद नहीं था क्योंकि उस लोटे की सूरत बेढंगी थी।

5. पं. बिलवासी मिश्र ने आँगन में आकर सबसे पहले अंग्रेज़ को छोड़कर बाकी सभी लोगों को आँगन से बाहर कर दिया। फिर आँगन में कुरसी रखकर उन्होंने साहब को आराम से बैठने के लिए कहा तथा उसका हालचाल पूछा था।

6. पं. बिलवासी ने झाऊलाल से लोटा खरीदने की बात इसलिए की ताकि अंग्रेज़ उस लोटे का जितना अधिक दाम लगा सके लग जाए। वे अपने मित्र झाऊलाल की मदद करना चाहते थे इसलिए उन्होंने उस बेढ़ंगी लोटे को अकबर का लोटा बताकर स्वयं खरीदने की बात की थी।

7. अंग्रेज़ को लगा कि यह एक ऐतिहासिक लोटा है। अंग्रेज़ को ऐतिहासिक चीज़ें इकट्ठा करने का

बहुत शौक था जब उसे पता चला कि यह लोटा बादशाह अकबर हाथ-मुँह धोने के लिए प्रयोग करते थे तथा यह ऐतिहासिक लोटा है। तब अंग्रेज़ ने वह लोटा झट से खरीद लिया।

(ख) 1. (ब) अपना रुपया सहेजना ✓ 2. (ब) जहाँगीरी अंडा ✓ 3. (स) लोटे में ✓
4. (ब) पाँच-सौ रुपये में ✓ 5. (अ) छत पर ✓

(ग) 1. जब लाला झाऊलाल के हाथ से लोटा छूटकर नीचे गली में गिर गया तो वे बहुत घबरा गए। उन्हें लगा कहीं लोटा किसी के सिर पर न गिर गया हो और किसी को गंभीर चोट न आई हो। वे सोच रहे थे कि कहीं किसी के स्वर्गवास की खबर न आ जाए क्योंकि लोटा बहुत ऊपर से नीचे गिरा था।
2. जब लोटा छत से नीचे गली में गिरा तो लाला झाऊलाल बहुत घबरा गए। उन्होंने जब लोटे को अंग्रेज़ के हाथ में देखा तो वे समझ गए कि लोटा इसी पर गिरा है तथा पूरी स्थिति को समझ लिया।

(घ) 1. पं. बिलवासी मिश्र ने अंग्रेज़ से कहा।
2. पं. बिलवासी मिश्र ने अंग्रेज़ से कहा।
3. पं. बिलवासी मिश्र ने अंग्रेज़ से कहा।

(ङ) 1. वह पानी तो ज़रूर लाई, पर – गिलास लाना भूल गई थी।
2. आपकी इज़ाज़त हो तो मैं इस – लोटे को इस आदमी से खरीद लूँ।
3. इस रद्दी लोटे के आप – पचास रुपये क्यों दे रहे हैं?
4. यह एक ऐतिहासिक – लोटा जान पड़ता है।
5. बिलवासी जी अफ़सोस के – साथ अपने रुपये उठाने लगे।

भाषा ज्ञान–

(क) 1. सप्ताह – सात दिनों का समूह 2. नवग्रह – नौ ग्रहों का समूह
3. चौपाई – चार पदों का समूह

(ख) 1. को– संप्रदान 2. में– अधिकरण 3. से– करण 4. का– संबंध

रचनात्मक ज्ञान–

उदाहरण उत्तर

(क) झाऊलाल और उनकी पत्नी के बीच हुए वार्तालाप से पता चलता है कि झाऊलाल नहीं चाहते कि उनकी पत्नी अपने मायकेवालों से पैसे ले क्योंकि इससे उनकी इज़्ज़त अपनी पत्नी के मायके में कम हो जाएगी। जहाँ तक झाऊलाल की पत्नी की बात करें तो ऐसा लगता है कि आर्थिक रूप से वह अपने पति पर निर्भर करती है तथा उनकी मजबूरी देखकर वह झाऊलाल को कुछ दिनों की छूट देने के लिए तैयार है।
* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।

(ख) बिलवासी जी को नींद इसलिए नहीं आई थी क्योंकि उन्होंने झाऊलाल को देने के लिए ढाई सौ रुपये अपनी पत्नी के संदूक से निकाले थे। बिलवासी जी ने अपना वादा पूरा करने के लिए यह किया था। जब बिलवासी जी ने अपनी चतुरता से पाँच सौ रुपये झाऊलाल को दिला दिए तो उन्होंने अपनी पत्नी के संदूक से निकाले पैसे जब तक वापस नहीं रख दिए तब तक वह चैन की नींद नहीं सो पा रहे थे।
* विद्यार्थियों को अपने विचार स्वयं प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें।

अध्याय-17

समय

अभ्यासः (पेज 119)

मौखिक–

(क) 1. समय से कवि का तात्पर्य वर्तमान समय / परिस्थितियों से है।
2. कवि काम को पूर्ण मन से यानी मन लगाकर करने की सलाह देता है।
3. जब हम किसी कार्य को दृढ़ निश्चय से करने की ठान लेते हैं तथा अपने ऊपर संदेह करना छोड़ देते हैं कि यह काम होगा या नहीं तब हम आत्मा पर विश्वास करते हैं। हम कह सकते हैं कि तब

हम आत्मविश्वास करते हैं। इसके कारण हमें सफलता मिलती है, और हम अच्छा अवसर भी खोने से बच जाते हैं।

4. इससे कवि का अभिप्राय है कि हमें पल-पल का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि ये पल मिलकर हमारा जीवन बनाते हैं। हमें हर पल अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य करना चाहिए।

लिखित–

1. इन पंक्तियों में कवि यह कहना चाहते हैं कि तुमने जिस काम को करने की ठान ली है, उस काम को पूरी निष्ठा और मन से करना चाहिए। ऐसे समय में अपने ऊपर विश्वास रखकर किसी भी प्रकार का संदेह नहीं रखना चाहिए। ऐसा सुअवसर बार-बार नहीं आता। इसे खो दिया तो बाद में पछताना पड़ेगा।

(ख) 1. (अ) पल-पल से ✔ 2. (ब) आत्मा पर विश्वास करके ✔
3. (अ) अलंकारिक शब्द ✔ 4. (स) समय, अवधि ✔ 5. (स) धनवान है ✔

(ग) 1. समय अनमोल है। यह ईश्वर द्वारा मनुष्य को प्राप्त अनुपम धन है। समय रहते ही हमें अपने सारे काम पूरे कर लेने चाहिए। काम करने के प्राप्त अवसर को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। काम को टालना नहीं चाहिए क्योंकि बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता। आलस्य नहीं करना चाहिए। स्वयं पर विश्वास करो।

(घ) 1. मनोभीष्ट – मनचाहा 2. नीर – जल 3. परमार्थ – परोपकार
4. सर्वथा – पूरी तरह से 5. तुच्छ – छोटा

भाषा ज्ञान–

(क) 1. चलना-फिरना– वृद्धावस्था के कारण अब चलना-फिरना कठिन हो गया है।
2. काम-काज– दादी घर पहुँचकर काम-काज में लग गईं।
3. सदा-सर्वदा– यह सिलसिला सदा-सर्वदा चलता रह सकता है।
4. भाग-दौड़– रोहन के पिता उसकी शादी की भाग-दौड़ में सब कुछ भूल गए हैं।
5. आना-जाना– इस जीवन में व्यक्तियों का आना-जाना लगा रहता है।

(ख) मनोभीष्ट – मनचाहा, तुच्छ – छोटा, सद्व्यय – अच्छा उपयोग करना, परमार्थ – परोपकार, श्रेष्ठ – सबसे उत्तम, विश्वास – भरोसा, सर्वथा – हर जगह

(ग) कम– दाल में नमक कम है।
काम– यह काम किसने किया है?
दल– हमें पुलिस दल बुला लेना चाहिए।
दाल– मुझे दाल नहीं खानी है।
ग्रह– सौरमंडल में आठ ग्रह हैं।
गृह– क्या आपने गृहकार्य कर लिया है?

(घ) 1. नीर– जल, पानी 2. तरु– वृक्ष, पेड़ 3. क्षुद्र– तीव्र, तेज़
4. सुयोग– सुअवसर, मौका

रचनात्मक ज्ञान–

(क) काल करै सो आज कर, <u>आज करै सो अब</u>,
पल में परलय होयगी, <u>बहुरि करेगा कब</u>।
अर्थ– कबीर जी इस दोहे में कहते हैं कि कभी भी कल पर कोई काम मत छोड़ो, जो कल करना है उसे आज कर लो और जो आज करना है, उसे अभी कर लो। किसी को पता नहीं अगले पल क्या होगा? अगर अगले पल प्रलय आ जाए तो जीवन का अंत हो जाएगा फिर जो करना है वो कब करोगे?
* विद्यार्थी स्वयं इस दोहे का अर्थ लिखेंगे।

(ख) उदाहरण अनुच्छेद
'समय का सदुपयोग'
समय कीमती है और हर किसी के लिए अमूल्य है। हमें समय को कभी बर्बाद नहीं करना चाहिए। समय

धन से भी कीमती है क्योंकि धन हम खर्च कर दें तो भी इसे वापस प्राप्त कर सकते हैं मगर समय को गंवा देते हैं, तो इसे वापस प्राप्त नहीं कर सकते। समय किसी के लिए नहीं रुकता। सबको समय के साथ-साथ चलकर इसका सदुपयोग करना चाहिए। यदि समय बर्बाद हुआ तो हमारा जीवन भी बर्बाद होगा। हमें सही समय पर सही काम करना चाहिए। सही समय पर उठना, नहाना, स्कूल जाने के लिए तैयार होना, कक्षा कार्य, गृह कार्य, पढ़ाई इत्यादि सही समय पर करनी चाहिए क्योंकि बीता हुआ समय वापस नहीं आता।

* विद्यार्थी इस विषय पर अनुच्छेद स्वयं लिखेंगे।

अध्याय-18

वरदान

अभ्यास: (पेज 125)

मौखिक–

(क) 1. ब्राह्मण के परिवार में उसकी बूढ़ी माँ व पत्नी थे।
2. ब्राह्मण गरीबी और घर के हालात से तंग आकर जंगल में चला गया था।
3. शंकर जी ने प्रकट होकर ब्राह्मण से उसकी इच्छा पूछी तथा उसे एक वरदान माँगने को कहा।
4. ब्राह्मण की माँ ने ब्राह्मण को शिवजी से उसकी (माँ की) आँखों की रोशनी माँगने के लिए कहा ताकि वह ब्राह्मण को देख भी सके तथा उसकी देखभाल भी कर सके।
5. अंत में ब्राह्मण ने अपने मित्र की बात मानी।

लिखित–

1. ब्राह्मण के परिवार पर शिवजी के वरदान का यह प्रभाव पड़ा कि अब ब्राह्मण की ज़िंदगी हँसी-खुशी कटने लगी।
2. ब्राह्मण को रोता देखकर उसके मित्र ने उससे रोने का कारण पूछा पर ब्राह्मण ने कोई उत्तर नहीं दिया और रोता रहा। यह देखकर बनिया भी ऊँची आवाज़ में रोने लगा।
3. ब्राह्मण की पत्नी ने महादेव से एक सुंदर-सा पुत्र माँगने के लिए कहा।
4. जब ब्राह्मण ने शंकर जी से अपनी पत्नी और माँ से बात करके ही वरदान माँगने की इच्छा जताई तो शंकर जी ब्राह्मण की सादगी से बहुत खुश हो गए तथा उन्होंने उसे घर जाने की अनुमति दे दी।
5. ब्राह्मण ने जंगल में जाकर बारह वर्षों तक शंकर भगवान की पूजा की। उसकी भक्ति से खुश होकर शंकर जी ने उसे वरदान माँगने को कहा।
6. ब्राह्मण की माँ और पत्नी इसलिए झगड़ा करती थीं क्योंकि शादी के कई वर्ष बीत जाने के बाद भी ब्राह्मण के घर कोई संतान पैदा नहीं हुई थी।

(ख) 1. (ब) महादेव ✓ 2. (ब) पत्नी से ✓ 3. (स) मित्र की ✓

(ग) 1. शादी 2. ब्राह्मण 3. आँखें 4. मित्र 5. माँ

(घ) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗
5. ✓ 6. ✗

भाषा ज्ञान

(क)

	प्रत्यय		उपसर्ग	मूल शब्द
1.	वरदान	–	वर	दान
2.	शीघ्रता	–	ता	शीघ्र
3.	चतुराई	–	आई	चतुर
4.	दूधवाला	–	वाला	दूध
5.	उपयुक्त	–	उप	युक्त

(ख) 1. बूढ़ी– बूढ़ा 2. बहू– बेटा 3. माँ– पिता

4. पुत्र– पुत्री 5. लड़का– लड़की

(ग) 1. गाँवों 2. माएँ 3. घरों 4. आँखें 5. पुत्रों

(घ) 1. अरे! आप क्यों रो रहे हैं? आपको क्या दुख है?
2. क्या बात है? तुम इस तरह क्यों चिल्ला रहे हो?
3. पत्नी बोली, ''देखो तुम्हारी माँ बहुत बूढ़ी है।''
4. माँ, अब तुम बताओ मुझे शंकर जी से क्या माँगना चाहिए?
5. ब्राह्मण ने कहा, ''महादेव मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि मैं आपसे क्या माँगू?''
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

(ङ) 1. घने (गुणवाचक विशेषण) 2. बूढ़ी 3. निर्धन
4. चमकती (गुणवाचक विशेषण) 5. सच्ची

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण टिप्पणी

यदि मैं ब्राह्मण के स्थान पर होती तो मैं उनसे यह वरदान माँगती कि मैं कभी किसी कार्य को करने में आलस न करूँ तथा अपने मित्रों, रिश्तेदारों व माता-पिता की मदद कर पाऊँ। जब मैं सबकी मदद करूँगी तो मुझे बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त होगा जिससे भगवान मुझसे खुश होंगे। जिससे भगवान खुश होते हैं, उसकी रक्षा वे स्वयं करते हैं और सभी कार्य समय पर करने से मैं अपना कीमती समय अपनी पढ़ाई में व्यतीत कर पाऊँगी। अगर मैं केवल आलस करती रहूँगी तो मैं जीवन में कुछ नहीं बन पाऊँगी।

* विद्यार्थी स्वयं सोचकर बताएँगे कि वे भगवान शिव से वरदान में क्या माँगते?

(ख) ब्राह्मण का मित्र बहुत बुद्धिमान था। मैं इस कथन से पूरी तरह सहमत हूँ क्योंकि उसने ब्राह्मण के घर के कलेश को अपनी बुद्धिमानी से एक बार में ही खत्म कर दिया। उसकी वजह से ही ब्राह्मण की बूढ़ी माँ की आँखें भी आ गईं तथा उसकी पत्नी को संतान भी प्राप्त हुई व ब्राह्मण को सोने का कटोरा भी मिला। अत: ब्राह्मण ने अपने मित्र को हमेशा याद रखा यह बहुत अच्छी बात है। जो मित्र मुसीबत में हमारे काम आता है, वही हमारा सच्चा मित्र होता है।

* विद्यार्थी अपना उत्तर स्वयं सोचकर बताएँगे।

अध्याय-19

भक्ति पद

अभ्यास: (पेज 129)

मौखिक–

(क) 1. मीराबाई का श्री कृष्ण के अतिरिक्त कोई नहीं है।
2. मीरा परिवार और लोगों की परवाह करना छोड़कर निश्चिंत हो गई है।
3. मीरा को प्रेम रूपी बेल से भक्ति में आने वाला आनंद रूप फल प्राप्त हो रहा है।
4. श्री कृष्ण अपनी माता से कह रहे हैं कि उन्होंने मक्खन नहीं खाया है। वे तो सुबह से ही गायों को चराने के लिए ले गए थे।
5. सुबह होते ही श्री कृष्ण को गायों के पीछे भेज दिया जाता है।
6. जब श्री कृष्ण अपने मुँह पर लिपटा मक्खन पोंछ लेते हैं तथा मक्खन से भरा दोना पीठ के पीछे छिपा लेते हैं तब माँ यशोदा हँस पड़ती हैं।

लिखित–

1. मीरा बाई श्री कृष्ण को ही अपना पति मानती थीं इसलिए वे कहती हैं कि जिसके सिर पर मोर मुकुट है, मेरा पति वही है। श्री कृष्ण के मुकुट पर मोर पंख हमेशा रहता था।
2. मीरा ने अपनी प्रेम रूपी बेल को अपने आँसुओं से सींचा है। सभी मीरा के श्री कृष्ण प्रेम को पसंद नहीं करते थे पर मीरा सभी के ताने सुनकर भी श्री कृष्ण की भक्ति में लीन रहती थी क्योंकि वे भगवान कृष्ण को बहुत प्रेम करती थीं।
3. शाम तक श्री कृष्ण बंसीबट पर भटकते रहते हैं।

4. हाथ छोटे होने के कारण श्री कृष्ण यशोदा माँ से कहते हैं कि वे इतनी ऊपर टँगे छीकें में से मक्खन नहीं निकाल सकते।
5. श्री कृष्ण दूसरे ग्वालों को अपना दुश्मन बता रहे हैं तथा कह रहे हैं कि उन्होंने जबरदस्ती श्री कृष्ण के मुख पर मक्खन लगा दिया है।
6. अंत में माता यशोदा श्री कृष्ण की चतुराई देखकर मुसकाती हैं तथा छड़ी दूर फेंककर श्री कृष्ण को गले लगा लेती हैं।

(ख) 1. (अ) परेशान करना ✓ 2. (स) लाठी और कंबल ✓ 3. (अ) मधुबन ✓

(ग) 1. इन पंक्तियों में सूरदास जी श्री कृष्ण व माता यशोदा के बीच हो रहे वार्तालाप के बारे में बताते हुए कहते हैं कि श्री कृष्ण अपनी माँ से कहते हैं कि माँ तू तो मन की बहुत भोली हैं, तूने मेरे बैरी सखाओं की बातों में आकर मुझे डाँटा। तेरे दिल में ज़रूर कोई भेद है, जो मुझे पराया समझकर आपने मुझपर संदेह किया तथा सोचा कि मैंने ही मक्खन खाया है। ये लो, अपनी लाठी और कम्बल। तूने मुझे बहुत नाच नचा लिया है। उनकी इन बातों को सुनकर माता यशोदा का मन मोहित हो उठा और उन्होंने हँसकर श्यामसुंदर को अपने गले से लगा लिया।

2. इन पंक्तियों में कृष्ण भक्त मीराबाई कहती हैं कि हे प्रभु श्री कृष्ण, मैंने तो आपको अपना पति मान लिया है। इस भक्ति के लिए मैंने अपने माता-पिता, भाई-बहन आदि सभी को छोड़ दिया है। मैंने अपने वंश-परिवार की मर्यादा को भी त्याग दिया है। रानी होते हुए भी मैंने संतों के साथ बैठकर कृष्ण भक्ति कर लोक-लाज की भी परवाह नहीं की है। अर्थात् मुझे अब किसी की कोई चिंता नहीं है। मेरा सबकुछ केवल भगवान श्री कृष्ण ही हैं।

(घ) 1. परवाह 2. लाठी 3. ज़बरदस्ती 4. हृदय 5. आँसू

भाषा ज्ञान

(क) 1. कुल – वंश, कुटुंब, खानदान 2. बालक – लड़का, बच्चा

(ख) 1. घृणा 2. साँझ 3. प्रीति 4. अपना

(ग) 1. बंसीधर / मुरलीधर 2. गिरिधर 3. गोपाल
4. मनोहर / मनमोहन

(घ) 1. मक्खन 2. मेरी 3. जानना 4. लो
* विद्यार्थियों के वाक्य भिन्न हो सकते हैं।

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण उत्तर

मीराबाई– जीवन परिचय

मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई. को मेवाड़ में हुआ था। इनके पिता राजा रत्नसिंह थे। बाल्यकाल से ही मीरा कृष्ण भक्ति में लीन थीं। बचपन ने इनके माता-पिता का देहांत हो गया था। विवाह योग्य होने पर इनका विवाह चितौड़ के महाराजा राणा सांगा के बड़े पुत्र भोजराज के साथ हुआ। विवाह के कुछ वर्षों बाद इनके पति की भी मृत्यु हो गई। अब मीरा अपना सारा समय कृष्ण की भक्ति में लगाती तथा उन्हें ही अपना सब कुछ मानने लगीं। वे कृष्ण के पद गाती, साधु-संतों के साथ उनकी हर लीलाओं का वर्णन करती रहती थीं। राजपरिवार के लोगों को यह अच्छा नहीं लगता था। राजपरिवार के लोगों ने कई बार मीरा को विष देकर उसे मारने का प्रयास किया। पर श्री कृष्ण ने उन्हें हमेशा बचा लिया। इसके बाद परेशान होकर मीराबाई वृंदावन धाम चली गईं तथा सारे सांसारिक बंधन उन्होंने तोड़ दिए। कहा जाता है कि मीरा एक पंक्ति **''हरि तुम हरो जन की पीर''** को गाते-गाते द्वारिका में कृष्ण की मूर्ति से लिपटकर उसी में विलीन हो गईं। मीराबाई की कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ हैं– राग गोविंदा, राग विहाग, मीराबाई की मलार और मीरा पदावली

* विद्यार्थी स्वयं मीराबाई के जीवन से संबंधित जानकारी एकत्रित कर उनका जीवन परिचय लिखेंगे।

(ख) मीराबाई के काव्य की भाषा राजस्थानी और ब्रज भाषा का मिला-जुला रूप है। इसमें गुजराती और पश्चिमी हिंदी के शब्द भी पाए जाते हैं।

अध्याय-20

सफ़र के साथी

अभ्यास: (पेज 136)

मौखिक–

(क) 1. सरदी के मौसम में विदेशी स्वीडन की यात्रा नहीं करते हैं।
2. लेखक ने स्वीडन की यात्रा सरदियों के मौसम में ही की थी।
3. स्वीडन में लोग लकड़ी के घरों में रहते हैं।
4. स्वीडन में यात्री अपनी स्लेज गाडियाँ लेकर चलते हैं या घोड़े किराए पर लिए जाते हैं।
5. लेखक को घोड़ा इसलिए नहीं मिल पाया था क्योंकि दो व्यापारी घोड़ा केंद्र के दोनों घोड़े ले गए थे।
6. लार्स लाल गालों और नीली आँखों वाला स्वस्थ किशोर था। उसके बाल सुनहरे थे।

लिखित–

1. स्लेज बरफ़ पर चलने वाली एक छोटी-सी गाड़ी होती है। इसे घोड़े या घोड़ों द्वारा खींचा जाता है। घोड़े के पीछे रस्सी की मदद से लकड़ी का फट्टा बाँधा जाता है और फट्टे के ऊपर या अंदर घासफूस रखी जाती है ताकि बैठने की जगह गरम रहे।
2. स्वीड़न के लोग अपने लकड़ी के घरों के अंदर कटाई, बुनाई और उपकरणों की मरम्मत का काम करते हैं।
3. परिवहन के लिए स्वीड़न में सरकार द्वारा हर बीस मील पर घोड़ा केंद्र खोले गए हैं क्योंकि यहाँ पर यात्रा करने का प्रमुख साधन स्लेज गाड़ियाँ और घोड़े हैं।
4. लेखक और लार्स ने रात्रि खुले में स्लेज गाड़ी के अंदर बिताई थी।
5. लार्स दाएँ-बाएँ देखकर बरफ़ के ढेरों की स्थिति का अंदाजा लगाना चाहता था क्योंकि पहाड़ियों की श्रृंखला समाप्त हो गई थी तथा बरफ़ के ढेर रास्ते में आसानी से इकट्ठा होकर यात्रियों के लिए समस्या उत्पन्न कर सकते थे।
6. लार्स ने लेखक के सोने के लिए सबसे पहले घासफूस को स्लेज की तली में अच्छी तरह बिछा दिया। फिर उस पर रेंडियर की खालें बिछा कर स्लेज को अच्छी तरह लपेट दिया। इसके बाद उसने लेखक को अपना फर वाला कोट नीचे बिछाकर उस पर सोने के लिए कहा।
7. बरफ़ पर मार्ग बनाने के लिए घोड़ों के पीछे लकड़ी की फाल को बाँधा जाता है। घोड़े उस फाल को खींचते जाते हैं तथा हिम के ढेरों को समतल करने के साथ-साथ हिम की परत को नीचे ठोकते जाते हैं। इस तरह एक समाट और मजबूत हिम मार्ग तैयार हो जाता है।
8. वापसी में लेखक लार्स के साथ इसलिए आना चाहता था क्योंकि वह लार्स की बुद्धिमत्ता तथा साहस का प्रशंसक बन गया था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे लेखक और लार्स में गहरी मित्रता हो गई थी।

(ख) 1. (अ) स्टॉक होम ✓ 2. (स) लैपलैंड ✓ 3. (अ) घास-फूस ✓
4. (स) रस्किन बॉण्ड ✓

(ग) 1. हिम 2. क्षेत्र, लकड़ी 3. घोड़ों 4. तापमान 5. एक किशोर
6. रात

(घ) 1. उपकरणों ✓ 2. अँधेरा ✓ 3. आशंकित ✓
4. यात्रा ✓ 5. समस्या ✓

भाषा ज्ञान

(क) 3. मैं पुस्तक पढ़ता हूँ ✓
4. अध्यापक स्कूल से कुछ देर पहले ही लौटा है। ✓
5. अक्षय बरेली से आया है। ✓

(ख) 1. ठंड – सरदी / शीत 2. विदेशी – परदेसी / विलायती 3. हिम – बरफ़

4. हिम्मत – ताकत / साहस
5. लकड़ी – काठ / काष्ठ

(ग) 1. निषेधात्मक – मैंने भयंकर सरदी में यात्रा शुरू नहीं की।
प्रश्नवाचक – क्या मैंने भयंकर सरदी में यात्रा शुरू की?
2. निषेधात्मक – घोड़े के साथ आदमी नहीं रहता है।
प्रश्नवाचक – घोड़े के साथ एक आदमी क्यों रहता है?
3. निषेधात्मक – मैंने घोड़ों के साथ यात्रा शुरू नहीं की।
प्रश्नवाचक – मैंने कितने घोड़ों के साथ यात्रा शुरू की?
4. निषेधात्मक – उसका पिता नील मीटरसन अगले घोड़ा केंद्र पर मौजूद नहीं था।
प्रश्नवाचक – उसका पिता नील मीटरसन अगले घोड़ा केंद्र पर मौजूद क्यों नहीं था?
5. निषेधात्मक – मेरा मन आशंकित नहीं था।
प्रश्नवाचक – क्या मेरा मन आशंकित था?
6. निषेधात्मक – रास्ता ऊबड़-खाबड़ नहीं था।
प्रश्नवाचक – रास्ता ऊबड़-खाबड़ क्यों था?

रचनात्मक ज्ञान–

(क) वार्तालाप मुख्य बिंदु
उदाहरण उत्तर
1. हमारे देश में लद्दाख, सियाचिन, मनाली, सोनमर्ग ऐसी जगहे हैं जहाँ बहुत अधिक सरदी तथा बरफ़बारी होती है।
2. यहाँ रहने वाले लोगों का जीवन बहुत दुर्लभ होता है।
3. अधिक ठंड पड़ने पर नलों में पानी जम जाता है।
4. ठंडे इलाकों में लोग पशुपालन अधिक करते हैं तथा माँस बहुत खाते हैं।
5. बहुत से लोग सरदियों के मौसम में मैदानी इलाकों में चले जाते हैं।
6. इन इलाकों में लोग सीढ़ीनुमा खेत बनाते हैं तथा यहाँ यातायात के लिए छोटी गाड़ियों का प्रयोग अधिक किया जाता है।
7. यहाँ लोग गरम कपड़े अधिक पहनते हैं तथा चाय और कॉफ़ी का अधिक सेवन करते हैं।

(ख) यदि मैं लार्स के स्थान पर होती तो मैं भी उसी की तरह अतिथि देवो भवः के भाव को सार्थक करते हुए उसी की तरह लेखक को ठंड तथा जंगली जानवरों से सुरक्षित रखने का हर संभव प्रयास करती। मैं भी स्लेज के भीतर लेखक को गरम रखने के लिए हर तरह से लेखक की सहायता करती। मैं भी लेखक के साथ-साथ घोड़े को भी आहार प्रदान करती तथा जिस निडर भाव से लार्स लेखक को जंगल में से लेकर जा रहा था ठीक उसी तरह मैं भी उसके साथ बातें करते-करते जंगल आसानी से पार कराती।

(ग) 'स्लेज' वाहन आमतौर पर सरदियों में बरफ़ पर घोड़ों या कुत्तों द्वारा खींचा जाता है। इसमें पहियों की जगह लकड़ी या धातु (लोहा, स्टील आदि) की लंबी, संकीर्ण पट्टियाँ लगी होती हैं। इन पट्टियों के ऊपर बैठने के लिए जगह होती है तथा इसका उपयोग बरफ़ पर यात्रा करने के लिए किया जाता है।

(घ) प्रस्तुत कहानी 'सफ़र के साथी' से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि अगर हम अपना काम पूरे मन से करते हैं तथा मुसीबत के समय घबराने की जगह मन लगाकर और निडरता से दूसरे व्यक्ति की मदद करते हैं तो सभी हमें पसंद करते हैं।

अध्याय-21

मेरा नया बचपन

अभ्यासः (पेज 141)

मौखिक–

(क) 1. इस कविता की रचयिता 'सुभद्रा कुमारी चौहान' हैं।
2. बच्ची हाथ में मिट्टी लेकर आई थी।

3. कवयित्री बच्ची के साथ खेलती, खाती और तुतलाती है।

लिखित–

1. कवयित्री ने अपना बचपन अपनी बच्ची में पाया। अपनी बच्ची के साथ जब कवयित्री खेलने लगी, खाने लगी तथा तुतलाकर बातें करने लगी तब कवयित्री को लगा जैसे उसका बचपन लौट आया है।
2. जब बच्ची ने बहुत प्यार से कवयित्री को मिट्टी खाने के लिए कहा तो कवयित्री का हृदय प्रफुल्लित हो उठा।
3. कवयित्री बरसों से अपना बचपन खोज रही है इसलिए वह फिर से बच्ची बनकर अपना बचपन दोबारा से जीना चाहती है।
4. कवयित्री को बचपन की मधुर यादें इसलिए याद आ रही थीं क्योंकि उसका बचपन बरसों पहले ही छूट गया था। जब उसने अपनी बच्ची के बचपन को देखा तो उसे भी याद आया कि उसकी माँ भी उसे कितना प्यार करती थी तथा उसके साथ खेलती, खाती और बातें करती थीं। कवयित्री यह सब फिर से जीना चाहती थी।

(ख) 1. (ब) मोती-से-आँसू ✓ 2. (ब) बच्ची ✓ 3. (अ) बच्ची में ✓
4. (अ) बचपन की ✓

(ग) 1. मोती – सीप 2. हृदय – दिल 3. कुटिया – घर
4. प्रफुल्लित – आनंद 5. मधुर – मीठा 6. याद – स्मरण
7. खुशी – हास्यप्रद 8. बचपन – बालपन 9. रुदन – रोना
10. जीवन – जान / ज़िंदगी

भाषा ज्ञान

(क) 1. रेखांकित 2. न्यायालय 3. निर्मल 4. संकल्प 5. हितैषी

(ख) 1. याद 2. मालाएँ 3. फूलों 4. बच्चियाँ 5. खुशियाँ
6. हाथों

(ग) 1. माँ – माता, जननी
2. फूल – कुसुम, सुमन, पुष्प
3. आनंद – खुशी, प्रमोद / हर्ष / प्रसन्नता
4. हाथ – कर, हस्त
5. घर-आलय – गृह

रचनात्मक ज्ञान–

(क) उदाहरण उत्तर

पात्र- कवयित्री, बच्ची

- कवयित्री (सोचते हुए)– आह! मुझे बार-बार अपने बचपन की मधुर यादें याद आती हैं। बचपन के जाते ही मेरे जीवन के सबसे खुशियों भरे पल भी चले गए। मुझे आज भी याद है कि मैं रोती थी, चीज़ों को पाने के लिए मचल जाती थी। मेरे बड़े-बड़े आँसुओं को देखकर माँ सारे काम छोड़कर मुझे प्यार से गोदी में उठा लेती थी और गालों को चूम-चूमकर सुखा देती थी।
  (तभी कवयित्री की बेटी कुछ कहती है)
- बच्ची– माँ, ओ माँ।
- कवयित्री– यह हाथ में क्या छिपा रखा है और तुम्हारे मुँह में क्या है?
- बच्ची– माँ काओ।
- कवयित्री– अरे! यह तो मिट्टी है। (हँसकर) तुम्हीं खाओ।
- कवयित्री– आज तुम्हारी बातें और अट्खेलियाँ देखकर मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मेरा बचपन जो वर्षों पहले बीत गया था वह तुम्हारे साथ खेलकर और तुतलाकर मैंने दोबारा पा लिया है।
  (इतना कहकर कवयित्री अपनी बेटी को गले लगा लेती है।)

(ख) 'बचपन' (अनुच्छेद)

'बचपन' वो समय है जिसे हम कभी भुला नहीं पाते हैं। यह वो समय होता है जब हम सभी एक आज़ाद पक्षी की तरह दादा-दादी की कहानियों में खोए होते हैं। माता-पिता का प्यार-दुलार पाने के लिए आपस में लड़ते हैं। छोटी-छोटी खुशी के पल हमारी पूँजी होती हैं। बचपन में हमें केवल दोस्तों के साथ खेलने तथा चॉकलेट और मिठाई खाने की चिंता सबसे अधिक होती है। रविवार के दिन पूरे परिवार के साथ बाज़ार जाकर अपने मनपसंद व्यंजन खाना हमें हमेशा याद रहता है। जब विद्यालय जाने का मन न हो तब पेट दर्द या सिरदर्द का बहाना मारना याद आता है। बचपन में हर तरफ़ खुशियाँ ही खुशियाँ नज़र आती हैं। बचपन में उछलना-कूदना, खाना-पीना और घूमना-फिरना ही सबसे अच्छा लगता है।

काश! मैं दोबारा बचपन के उन पलों को जी पाऊँ। काश! मैं दोबारा से छोटा बन जाऊँ।

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

Regd. Off. : F-214, Laxmi Nagar, Delhi-110 092
Tel. : 91-11-4758 6784, 91-97116 18765
E-mail : yellowbirdpublications@gmail.com • info@yellowbirdpublications.com
Website : www.yellowbirdpublications.com